॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

लघु पद्मावती मण्डल पूजाविधान

श्री गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज विरचित

परम पूज्य १०८ आचार्य श्री गुणनंदीजी महाराज

''वैराग्य स्थली''

उत्तम-प्रकाश टॉकीज के पिछे, शेळके मळा,
पॉवर हाऊस के आगे, इचलकरंजी जि. कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

लघु पद्मावती मंडल पूजाविधान

रचयिता

श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागरजी महाराज

निर्देशन

बा. ब्र. कु. जयश्री दीदी, पुनम दीदी

मुल्य ३५/- प्रति : १०००

प्राप्तिस्थान

श्री क्षेत्र कुन्थुगीरी

जि. कोल्हापूर ता. हातकणंगले, मु.पो. आलते

(महाराष्ट्र)

प्राक्कथन

बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि महादेवी पद्मावती सम्बन्धी यह तीसरा विधान आपके हाथों में आ रहा है, पहला नवरात्रिविधान, दूसरा ४८ कोठेवाला संस्कृत १ दिन का विधान यह एक दिन का तीसरा हिन्दी में विधान है, संस्कृत का विधान लोगों को जब कठिन लगा तो हिन्दी में लिखने की आवश्यकता पड़ी, इस विधान को संगीत में भी संगीतकार लोग गा कर पढ़ सकते हैं, और विधान कर्ता यजमान आनन्द ले सकते हैं, इसमें प्रथम सकलीकरण , मंडप प्रतिष्ठा इन्द्रप्रतिष्ठा फिर अभिषेक की विधी करें, उसके बाद नव देवता पूजा पार्श्वनाथपूजा धरणेन्द्रपूजा, पद्मावती पूजा कर विधान समाप्त करे, यही क्रम इस विधान का है श्रध्दापूर्वक करने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं सब संकट दूर होते हैं, किसी भी प्रकार की कमी नहीं रहती है श्रद्धा ही मुख्य है जिसकी श्रद्धा हो वे करें, श्रद्धा नहीं तो नहीं करें, किन्तु विरोध नहीं करें। देवी के श्रृंगार के सामान की लिस्ट, व मंडल का नकाशा आदि दे दिया है, मंडलविधान की सामग्री १७० अर्घ के अनुसार लावें। जाप्य मंत्र भी आगे दे दिया है, संस्कृत की कठिनाइयों को समझते हुये, समाज अवश्य लाभ उठावें, जिसको नौ दिन का विधान करने की शक्ति नहीं है तो एक दिन का विधान करें, विधान लिखने में सहायक व प्रकाशक सबको आशीर्वाद।

ग. आ. कुन्थुसागर

इस पुस्तक का संपादन
आचार्य १०८ श्री गुणनंदीजी महाराज माताजी संघ ने किया ।

पद्मावती मण्डल पूजा विधान

पंचरंगों से नक्शों के अनुसार स्वच्छ धुला हुआ एक सुन्दर कपड़ा बिछाकर मंडल माँड दें। उस मण्डल वेदी पर पंच कलशों को पंचरंग (मौली) धागा बाँधकर नारियल फल रखें। उन कलशों को माण्डले के ऊपर सजाएँ। केले के स्तंभ आशापाल के पत्तों का वन्दनवार लगाएँ, चँदोवा बाँधें और मण्डल को खूब सजाएँ। फिर मण्डल के आगे अभिषेक पीठ की स्थापना कर दें। यजमान धुले हुए वस्त्र पहनकर स्थापना पूर्वक पंचामृतभिषेक करें, शान्तिधारा करें, फिर अंगपोच्छन करके माँडले के ऊपर भगवान का स्थापन करें,। भगवान के वाम भाग में एक टेबल लगाकर उस पर पद्मावती देवी की मूर्ति को सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषणों से सजाएँ, षोडशभरण पहनाएँ, पूजा प्रारम्भ करें । संकलीकरण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डलदेवी शुद्धि, पंचकुमार पूजा, दशादिक्पाल पूजा, महर्षि उपासनादि करके नवदेवता की पूजा करें। फिर पार्श्वनाथ पूजा करें, धरणेन्द्र पूजा करें, उसके बाद मण्डल विधान प्रारम्भ करें। पद्मावती पूजा करें। जो-जो समान वस्त्राभूषणादि लेकर आये हैं उन सबको पहले ही पहना दे। पूजा में नाम आने पर पुष्पांजलि क्षेपण कर दें फिर प्रथम कोठे पर चौबीस भुजा का चौबीस अर्घ्य चढ़ा दें। द्वितीय कोठे के ऊपर पद्मावती सताष्टक पूजा के १०० अर्घ्य चढ़ा दें। पूर्ण अर्घ्य चढ़ाकर शान्ति पाठ विसर्जन कर दें।

विधान की सामग्री

१५० नारीयल, १५० अर्घ की सामग्री, ५ कलश, १-१ रुपये कलश में, ५ कलर की रंगोली १-१ किलो, पंचामृतअभिषेक का समान, हरे फल केला, मोसंबी आदि.

पद्मावती के श्रृंगार का सामान

५ मीटर की साड़ी, २ मीटर ब्लाउज के लिए, मुकुट, हार, चूड़ियाँ, कुण्डल, पायल, कंगन, जेवर का पूरा सैट, बड़ी माला, कुंकुम, काजल, बिन्दी, इत्र, दर्पण, तेल, चुवेला, गजरा, बिछवा, तिलक , भीगे चने आधा किलो, नौ प्रकार की १-१ किलो मिठाई, आधा-आधा किलो नौ प्रकार की मेवा, नौ प्रकार के हरे फल, गन्ना (ईख), सुवर्ण कलश, ५ पान, ५ सुपारी, १०० इलायची आदि । देवी का पंचामृत अभिषेक करके खूब सजा दें । सुवर्णादिक आभरण आदि श्रृंगार का सभी सामान मंगवाएँ । अपनी शक्ति अनुसार जैसा ला सकें वैसा करें ।

जाप्य मंत्र

(१) ॐ आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै, मम सर्वकार्यं सिद्धिं कुरु, कुरु नमः ।

सवा लाख या साढ़े बारह हजार इस मंत्र का विधिपूर्वक जाप करें । दशांग होम कुण्ड में आहुति दें । देवी आवश्यक कार्य सिद्ध करेगी ।

(२) ॐ ह्रीं नमः ।

अथवा इस एकाक्षरी पद्मावती देवी के मंत्र के सात लाख जाप करें । होम कुण्ड में दशांग आहुति दें । देवी अवश्य दर्शन या स्वप्न में दर्शन देगी इससे सर्वकार्य की सिद्धि होगी ।

(३) ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय, ह्रीं पद्मावती संहिताय क्रों ह्रें ह्रीं नमः ।

इस मंत्र के सवा लाख जाप करने से सर्व कार्य सिद्धि होगी । यह सर्वकार्य सिद्धि मंत्र है । जैसा योग्य समझें, वहीं मंत्र लें और दस दिन में जाप कर लें । नव रात्रि पूजा विधान में इन तीन मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जाप करें, फिर दशांग आहुति दें ।

आरती श्री क्षेत्रपाल

करूँ आरती क्षेत्रपाल की जिन-पद सेवक रक्षपाल की ।। टेक ।।
विजय वीर अरु मणिभद्र की अपराजित भैरव आदि की ।। करूँ ।।
सिर पर मणिमय मुकुट विराजै, कर में आयुध त्रिशूल जु राजै ।। करूँ ।।
कूकर वाहन शोभा भारी, भूत प्रेत दुष्टन भयकारी ।। करूँ ।।
लंकेश्वर ने ध्यान जो कीना, अंगद आदि उपद्रव कीना ।। करूँ ।।
जभी आपने रक्षा कीनी, उपद्रव टारी शान्तमय कीनी ।। करूँ ।।
जिन भक्तन की रक्षा करते, दुःख दारिद्र सभी भय हरते ।। करूँ ।।
पुत्रादि वांछा पूरी करते, इसलिए हम आरती करते ।। करूँ ।।

।। श्री पद्मावती देवी प्रसन्न ।।

सप्त शुक्रवार व्रत विधान तथा कथा

मगध देश में राजगृह नगर के पास विपुलाचल पर श्री महावीर स्वामी का समवशरण आने का समाचार, महाराज श्रेणिक ने वनपाल के मुख से सुना और

हर्षित होकर महारानी चेलना के साथ सपरिवार वहाँ पहुँचे । बड़े भक्तिभाव से जय-जयकार करके तीन प्रदक्षिणाएँ देकर श्रीवीर प्रभु को त्रिबार नमोऽस्तु किया । फिर वे बारह सभा के मनुष्यों के कोठे में बैठे गये । भगवान की दिव्य ध्वनि, श्री गौतम गणधर की वाणी से सुनकर राजा-रानी ने भक्तिभाव से आनंदित होकर हाथ जोड़ कर विनंती की, "हे भगवान ! संसार में दम्पत्ती को अखण्ड सौभाग्य प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए ? इस विषय में कोई एक कथा हमें सुनाइये ।" तब भगवान के मुख से वाणी निकली - " प्राचीन काल में सौराष्ट्र देश में परिभद्रपुरी नाम का नगर था । वहाँ विकारमाप्ता नामक तेजस्वी, महापराक्रमी, न्यायी, धर्मी व प्रजावत्सल राजा था । उसकी बहुत रानियाँ थीं । उनमें भूमिभुजादेव[redacted]ो मंत्रि की तरह सहायता दे[redacted] थी । दोनों ने अपने राज्य में खूब धर्म प्रभावना की । उसकी[redacted]गरी में श्रुणुयात नाम का एव[redacted]दरिद्र व्यापारी था । उसकी पत्नि का नाम रुक्मावती था । [redacted]सकी जैनधर्म में बहुत श्रद्धा [redacted] भक्ति थी । पाप के डर से उससे कोई बुरे कार्य नहीं होते थे । [redacted]र में दरिद्रता के कारण वह [redacted]खी थी, इसलिए उसे किसी के पास जाकर बैठना बुरा लग[redacted] था और अपने घर में जो थ[redacted]उसी में सन्तुष्ट थी । अपनी बुरी स्थिति के कारण किसी से [redacted]हीं बोलती थी । अधिक संता[redacted] होने के कारण उनकी देखभाल में सारा दिन बीत जाता था[redacted] वह सन्तान की इच्छा पूर्ति [redacted]था पालन पोषण में असमर्थ थी । इस दुःख से छुटकारा पाने[redacted]की रात-दिन उसे चिन्ता रहती[redacted]थी । इससे उसका शरीर दुर्बल हो गया था । क्या करूँ, कह[redacted]जाऊँ, उसे कुछ समझ में नह[redacted] आज भाग्य का दिन निकला है । ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं । गाँव के बाहर बगीचे में श्री विजयाभिनन्दन नाम के मुनीश्व[redacted] आये हैं । उनके दर्शनों के लिए गाँव के स्त्री पुरुषों की भीड़ लग रही है । वे बहुत ज्ञानी हैं त[redacted]ा भक्तों को हितकारी उपदेश देते हैं, सो हम भी उनके दर्शनों का लाभ लें और इहलोक - प[redacted]लोक के हित को साधकर सद्गति प्राप्त कर लें । इसलिए मैं तुझे बुलाने आई हूँ । तेरी इच्छ[redacted] हो तो मेरे साथ चल । यह सुनकर रुक्मावती को अत्यन्त हर्ष हुआ । चिंतित मन में शांत[redacted] हुई । घरेलू दुःखों से छूटने का मार्ग मिले और शांति सुख की प्राप्ती हो, इस भावन[redacted] से वह उस स्त्री के साथ जाने को निकली । उहाँ पहुँचकर उसने [redacted]देखा कि दर्शनों की प्रतीक्षा में अपार

जनसमुदाय श्रीविजयाभिनन्दन मुनिराज के सामने जय-जयकार कर रहा है। विमान से पुष्पवृष्टि हो रही है। यह दृश्य देखकर रुक्मावती का मन प्रफुल्लित हुआ। उसने मुनीश्वर को सादर नमस्कार किया और श्राविकाओं की सभा में जाकर बैठ गई। मुनीश्वर ने उपदेश प्रारम्भ किया। उसे सुन वह इतनी खुश हुई कि अपने बाल-बच्चों, घर-बार व संसार को भूल गई। मुनिराज ने अपनी अमृतवाणी से सात तत्त्व का वर्णन किया, जीव के हित का मार्ग बतलाया और अखण्ड शोभा बढ़ाने वाली व अत्यन्त सुख देने वाली सप्त शुक्रवार व्रत की क्रिया बतलाई। वह क्रिया रुक्मावती ने ध्यान पूर्वक सुनी।'' वह क्रिया इस प्रकार थी -

विधान:- श्रावण महीने में प्रत्येक शुक्रवार को उपवास अथवा एकाशन करें। शक्ति अनुसार पूजा सामग्री लेकर श्री जिन मंदिर में जाकर दर्शन स्तुति स्तोत्रादि द्वारा भगवान की भक्ति करें, १००८ श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर की, श्री धरणेन्द्र, श्री पद्मावती सहित पंचामृत अभिषेक पूर्ण करके पद्मावती देवी की मूर्ति को दूसरे एक ऊँचे आसन पर विराजमान करें। नाना प्रकार के वस्त्रालंकारों से उनका श्रृंगार करें। दीप,धूप, फूलों के हार, केले के खम्भ इत्यादि साधनों से मण्डप सजावें, हल्दी, कुंकुम, भीगे हुए चने आदि लेकर पंचोपचार पूजा करें। बाद में श्री पद्मावती महादेवी को मणि मंगलसूत्र आदि आभूषण पहनावें। फिर आटे के दो दीपक सहित जयमाला बोलकर तीन प्रदक्षिणाएँ देकर पूर्णार्घ्य चढ़ावें। तदनन्तर महादेवी के मंत्र की आरती करके शांति भक्तिपूर्वक विसर्जन करें। फिर सप्त शुक्रवार की कथा सुनें। श्री पद्मावती के सहस्त्र-नाम के प्रत्येक बीजाक्षर मंत्र को बोलकर एक-एक चुटकी कुंकुम या लवंग पुष्प चढ़ावें। प्रत्येक शतक में अर्घ्य चढ़ावें, गंधोदक सेचन करें। **''ॐ आं क्रों ह्रीं ऐंक्लीं हंसौ श्री पद्मावती देव्यै नमः, मम सर्व विघ्नोपशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।''** इस मंत्र का लाल कनेर के फूलों से १०८ बार त्रिकाल जाप करें। यदि कनेर के फूल उपलब्ध न हों तो जाती व गुलाब पुष्प से जाप करें। आखिरी शुक्रवार को ऊपर कही गयी सारी क्रिया परिपूर्ण करके श्री पद्मावती माता को साड़ी पहनावें, षोडषालंकार से श्रृंगार कराएँ और नीचे लिखी सामग्री लेकर उनकी गोद भरें। पाँच हरी चूँडियाँ पहनावे, पाँच हल्दी गाँठ, पाँच खोपरा, कुंकुम के पाँच चौपड़े, पाँच नींबू, पाँच केले, पाँच छुहारे, पाँच मखाने, बतासे आदि इस प्रमाण को लेकर उत्तम नारियल तथा चोली का वस्त्र लेकर गेहूँ या चावल से पाँच सुवासनी स्त्रियों द्वारा गोद भराएँ।

गोद भरते वक्त नीचे लिखा मंत्र पढ़े -

जयस्फटिक रुपदभामनी, पद्मावती अवहरिणी ।
धरणेन्द्रराज कुलयक्षिणी, दीर्घ आयुरारोग्यरक्षिणी ।।

उसके बाद कुटुम्बीजनों को भीगे चने, हल्दी, कुंकुम, मखाना, बतासा, गुड़, खोपरा, पान, सुपारी इत्यादि गोद का प्रसाद बोलकर बाँटे, एकत्र सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी कुंकुम लगाएँ । बाद में जय-जयकारक करके मंगलगीत गाजेबाजे के साथ गाते हुए, घर वापिस आएँ । इस प्रकार पाँच वर्ष पर्यन्त यह व्रतविधि पूर्ण होने पर उद्यापन करें ।

उद्यापन विधिः- पाँचकोनी कुम्भों की स्थापन करें । पाँच कलश स्थापन करें । पंचवर्णी रेशमी सूत बाँधकर पाँच कोने तैयार करें । चारों दिशाओं में केले के खम्भ खड़े करें । हाँडी,गोला, झाड़ आदि से सजावट करें । आटे के दीपक से आरती उतारें, चमर ढलावें, कुंकुम मिश्रित अक्षत एवं फूलों की वृष्टि करें । श्री पद्मावती देवी का विधान करें । पाँच पकवान के पाँच नैवद्य अर्पण करें । श्री देव, शास्त्र, गुरु, पद्मावती देवी और सुवासिनी बहिन को दोने में फूल रखकर, फूल पर कुंकुम और मोती रखकर चढ़ावे और देवें । पाँच-पाँच मंगल वस्तुएँ श्री जिनमंदिर में चढ़ावें । आर्यिका को आहारदान और वस्त्रदान करें । पाँच दम्पत्ति को इच्छित भोजन देकर संतुष्ट करें । इस प्रकार से यदि उद्यापन करने की शक्ति न हो तो दूना व्रत करें । ऐसा करने से उद्यापन करने का फल मिलता है ।

माँ, बाप, बहिन, भाई, ननद, देवर, जेठानी, सास, ससुर सबके आशीर्वाद से पति परमेश्वर का आखिर तक अच्छा सहवास मिले । सुसंतान सहित सुखी संसार बने, आनन्द से समय बीते, साथ-साथ धन और संतान की वृद्धि, आरोग्यता, दीर्घ आयु एवं भूत पिशाचादि का भयनाश, इत्यादि सुखों की प्राप्ति होकर चारों तरफ कीर्ति फैलती है । इस व्रत की महिमा अपरम्पार है । परन्तु श्री जिन-धर्म पर एक निष्टाभक्ति रखें । जीवन पर्यन्त श्री पद्मावती माताजी की सेवा नियमित रुप से करने की परम्परा से मोक्ष मार्ग की सिद्धि होती है ।

स्त्रियों के लिए कुमारी अवस्था में ''आत्म कुंकुम'' हल्दी और यौवन अवस्था में ''सप्तकुंकुम'' निश्चय से दुर्गति निवारक है, परन्तु इस जन्म में भी -

''कज्जल कुंकुम कांच कवरी कर्णशेखरम ।
एवं पंच प्रकीर्त्यानि ककाराणि पुरन्ध्रीणाम ।।''

अर्थ - काजल, कुंकुम, चोटी एवं कर्णफूल ये सौभाग्यवती स्त्री के प्रसाधन कहे गये हैं । सौभाग्यवती कहलाने वाली महाभाग्यवती को ऊपर कहे पाँच ककार की जीवन के आखिर तक प्राप्ति होती है । अखण्ड सौभाग्यवती कहलाकर बड़े गौरव से उसका आयु पर्यन्त यश फैलता हैं । ''आत्मकुंकुम'' ''सप्तकुंकुम'' इन व्रतों के महत्त्व का वर्णन श्री धरणेन्द्र देवराज की चंचल जिहवा द्वारा भी किया जाना अति कठिन है । यह महाकल्याणकारी है । बरसाती तुच्छ नदी के प्रवाह के समान क्षणभंगुर जीवन को निस्सार समझकर संसार बढ़ाना मूर्खता है । इस भवसागर से पार होने के लिये विचारशील व्यक्ति को यह व्रत कारणीय है । इसलिए महिला गण इस व्रत के पालन में अबला की तरह अति कोमल न हों । स्त्री जन्म को इसी भव में सार्थक कर लें । अगला जन्म अच्चकुल में होगा, ऐसा निश्चय से नहीं कहा जा सकता, इसलिए नर से नारायण बनने का यही उत्तम साधन है । बार-बार नरीव प्राप्त नहीं होता, इसलिए जागरुक होकर उत्साह व प्रसन्नता से ब्रत धारण करें ।उससे सुख की प्राप्ति होगी । इस प्रकार रुक्मावती ने मुनीश्वर के मुखारविन्द से व्रत का माहात्म्य, विधि और कल सुनकर अपनी दरिद्रता की बिना परवाह किये मुनिराज के पास व्रत लेने का मन में निश्चय किया । उसने मुनिराज को नमोऽस्तु करके अपना भाव व्यक्त किया । मुनिराज ने पंचपरमेष्ठि की साक्षी में उसको व्रत दिया । श्री गुरुमुख से व्रत लेकर प्रसन्न मन से रुक्मावती घर गयी और शक्य साधन सामग्री से व्रत शुरु किया । उसी गाँव में उसका गुरुदेव नामका भाई रहता था । वह बड़ा सेठ था । उसने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार निमित्त गाँव के सारे नागरिकों को एक सप्ताह पर्यन्त इच्छित भोजन कराकर संतुष्ट करने के भाव से घर-घर निमंत्रण भेजा, परन्तु अपनी बहन को निमंत्रण नहीं भेजा क्योंकि वह दरिद्री थी । अगर आयेगी तो देखकर लोक में निन्दा होगी, सोचकर उसे याद तक नहीं किया । गाँव के छोटे-बड़े सब लोग खा-पीकर जब उसी के दरवाजे के सामने से जाने लगे तो उसे आश्चर्य हुआ और सोचने लगी कि मैं और मेरा भाई एक ही हाड़-मांस, रक्त, पिण्ड के हैं । उसने सब लोगों को तो संतुष्ट किया है, मैंने उसके ऐसे क्या घोड़े मारे हैं ? फिर सोचा काम की धाँधली में भूल गया होगा, इसलिए बेकार

उस पर रोष करके अपने सोने जैसे भाई को दोष देना ठीक नहीं । निमंत्रण नहीं भेजा तो क्या हुआ, भाई का ही तो घर है, जाने में क्या हर्ज है । ऐसा विचार करके वह बाल-बच्चों सहित जीमने गयी । बच्चों को सामने लेकर स्त्रियों की पंगत में बैठी । थोड़ी देर बाद उसका, भाई, कौन आया कौन रहा, यह जानने के लिए वहाँ घूम रहा था, उसका ध्यान बहिन की तरफ गया तो पासा आया और गुस्से में बोला,बहिन, तू आज यहाँ कैसे आयी ? तेरी गरीबी के कारण मैंने जानकर तुझे नहीं बुलाया । तेरे पास न अच्छे कपड़े हैं, न गहने । तुझे ऐसी दरिद्र देखकर मुझ पर लोग हँसेंगे । इसलिए आज आयी तो आयी मगर कल मत आना, समझी ? बहिन बेचारी लज्जित होकर नीची गरदन कर, खाना खाकर, बच्चों को लेकर घर गई । दूसरे दिन भी बच्चे कहने लगे, माँ आज भी मामा के यहाँ खाने के लिए जायेंगे । यह सुनकर माँ के पेट में खलबली मची । उसने बच्चों को बहुत डाँटा । मगर वे माने नहीं, उनकी हठ के कारण फिर मन में विचार किया कि कैसा भी हो अपना भाई ही हैं, बोला तो क्या हुआ, अपनी गरीबी है तो सुनना ही पड़ेगा । मगर आज का निर्वाह तो होगा, ऐसा सोचकर दूसरे दिन भी बच्चों को लेकर भाई के घर गई और खाने को बैठी । कल की तरह ही भाई की सवारी पंगत में आने पर उसने उसे देखा और बोला, बहिन कैसी भिखारिन है? कल तुझे मना किया था तो भी आज सुअरनी की तरह बच्चों को लेकर आ गयी? तुझे शर्म कैसे नहीं आई? आज आयी तो आई अगर फिर कल आई तो हाथ पकड़कर निकाल दूँगा । उसने यह चुपचाप सुन लिया और खाने के बाद उठकर अपने घर चली गयी । तीसरे दिन भी इसी प्रकार हुआ । तब भाई को खूब गुस्सा आया और उसने उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया । उसे बड़ा दुःख हुआ । घर आकर फूट-फूटकर रोयी । उसके मन में विचार आया कि मैंने कौन सा घोर पाप किया जिससे इस जन्म में मुझे घोर दरिद्रता की मार पड़ रही है । सच है अनन्त जन्मों के पापों की राशि यह दरिद्रता की अवस्था है । इसकी अपेक्षा तो नरक के दुःखों में भुन जाना ही अच्छा होता । अब यह यम यातना सही नहीं जाती । इससे तो मरण अच्छा क्योंकि वह तो एक बार ही भोगना पड़ता है । परन्तु दरिद्रता का दुःख जीवन पर्यन्त भोगना पड़ता है, धिक्कार है, ऐसे जीने को । हे पद्मावती देवी ! हे अम्बिका माता ! तू ही मेरी सहायता कर माँ । मुझे जगत में किसी का आधार नहीं, आसरा दे माता ।

प्रकार करुण क्रन्दन करके वह खूब रोई, रोते-रोते उसे नींद आ गयी । नींद में उसे स्वप्न आया । उसके रुदन की ध्वनि श्री पद्मावती देवी के कानों पर जा टकराई, महादेवी तत्काल मुकुट, कुण्डल, हार आदि, पहन, एक हाथ में धर्मचक्र लिए हुए जगमगाती पोशाक पहन करके पास आकर खड़ी हो गयी और कहने लगी - हे महाभागे ! तू दुःखी न हो, घबरा मत, तू जो आचरण कर रही है उस सप्त शुक्रवार व्रत को मैं अच्छी तरह जानती हूँ । आज तुझे दरिद्रता सम्बन्धी अतिशय दुःख हुआ है, तथापि तेरा कष्ट अत्यंत तेज से युक्त है -

कष्टाधीनं हि दैवं, दैवाधीनं सुकृतफलं तथैव ।
''सुज्ञावाक्या चरिता भुक्तिः मुक्तिः तद्धीना ।''

अर्थः- कष्टाधीन दैवयोग है । दैवधीन ही पुण्य का फल है इसलिए महानपुरुषों के द्वारा कथित मार्ग पर चलना चाहिए । उसके अधीन संसार के भोग व मुक्ति हैं । तू ध्यान दे और एक निष्ठापन से श्री जिन परमात्मा का चिन्तन कर, उससे तेरा कल्याण होगा । ऐसा कहकर वह देवी अदृश्य हो गयी । रुक्मावती ने नींद से जागकर देखा तो वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया यह चमत्कार क्या चमत्कार है ? कहकर वह उठ बैठी, मगर उसका मस्तक शून्य हो गया । उसे कुछ भी नहीं सूझा तो फिर वह जिनमंदिर में जाकर शांतचित से श्री पद्मावती महादेवीं का मुखकमल देखने लगी । तब उसे वह मूर्ति हँसती हुई दिखायी दी । उस वक्त रुक्मावती दोनों हाथ जोड़कर विनंती करने लगी, हे देवी ! महामाते ! अम्बिके ! पद्मावती माता ।

शरण भी पाया धांवगे धावं या ठाया ।
अनाथ झाली तुमची दुहिता । भूवरी नुरला मजला त्राता ।
भाऊ-भाऊ म्हणुनि आता । कोठे जाऊ । तुझेचिमनमनवाहू ।।

अर्थः- मैंने तुम्हारी शरण को पाया है । मेरी रक्षा करो, मुझे सन्मार्ग पर लगाओ । तुम्हारी लड़की अनाथ है । इस जगत में मेरा कोई रक्षक नहीं रहा । भाई, भाई कहती हुई अब कहाँ जाऊँ, मैंने तुम्हें ही अपने मन में धारण किया है ।

इस प्रकार बहुत देर तक प्रार्थना व भक्ति करने के बाद उसे भान हुआ कि घर में बच्चे भूख से व्याकुल होंगे, सोचकर ध्यान में उठी और घर को चली । घर आकर देखा कि बच्चे कामदेव के अवतार के समान दिख रहे हैं । घर में धन-

धान्य की भरभराहट होने लगी है, जगह-जगह वैभव खुलते लग रहे हैं । हर काम में यश की वृद्धि हो रही है और सामने नयी नवकोनी हवेली बनकर तैयार है । घर में लक्ष्मी की बाढ़ ऐसी आयी हुई है कि शायद सावन मास में बहने वाली नदी का प्रवाह भी उससे कम ही होगा । जहाँ-तहाँ आनन्द है । सच देखा जाये तो उसे दो वक्त के खाने की भी मारामारी थी वहाँ अब पाँच पकवान की थालियाँ भरी दिखने लगी हैं । अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हैं । सब तरह से घर में भरभराहट है । उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गयी है । यह कीर्ति सुनकर उसका भाई आश्चर्य चकित हुआ । अपनी बहिन का आदर सत्कार करना चाहिए, विचार कर स्वयं उसके घर आया और बहिन से बोला, बड़ी बहिन, तुम कल मेरे घर खाने को आना । ना मत करना, तुम आओगी तो ही खाना खाऊँगा, नहीं तो मैं भी खाना नहीं खाऊँगा, समझी? बहिन ने सोचा चलो, अपना भाई बड़े सम्मान से बुलाता है, अब हम श्रीमंत हुए तो गर्व नहीं करना चाहिए, इसका इस समय अपमान करना ठीक नहीं है । सिर्फ इसको अपने किए हुए का पश्चाताप हो और सन्मार्ग प्रवर्तक होकर अहंकार छोड़े, ऐसा विचारकर वह अच्छे गहने तथा बढ़िया ओढ़नी पहनकर उत्तम श्रृंगार कर सम्मान से भाई के घर गयी । भाई बड़ी आस्था से राह देख रहा था । उसके आने के साथ उसे पाँव धोने को गरम जल दिया । पाँव पोंछने को रुमाल दिया । थाली परोसने पर दोनों बहिन-भाई बड़े प्रेम से पास-पास खाने को बैठे । बिछे हुए पाटे पर बहिन ने बदन पर से ओढ़नी उतार कर रक्खी, भाई ने समझा गरमी लगती होगी । बाद में शरीर पर से गहने उतारकर रक्खे । भाई ने सोचा अपनी कोमल बहिन को बोझ लगता होगा सो उतार हैं । परन्तु उसके बाद बहिन ने पहला चावल ग्रास उठाया और ओढ़नी पर रक्खा । पूरण पोली उठाई और हार पर रक्खी । भाजी उठाई और कण्ठी पर रक्खी, लड्डू उठाया भुजाबंध पर रक्खा, जलेबी उठायी मोती के कंगन पर रखी । यह देखकर भाई ने पूछा, बड़ी बहिन ! तुम यह क्या करती हो? बहिन ने शान्त मुद्रा से कहा, मैं जो करती हूँ वह ठीक है । जिनको तुमने खाने को बुलाया है उनको मैं खाना दे रही हूँ । उसको कुछ समझमें नहीं आया, फिर उसने विनंती की, बहिन ! अब तुम खाओ । तब बहिन ने कहा - हे भाई साहब! आज मेरा खाना नहीं है, इस लक्ष्मी बहिन का है, मेरा खाना मैं पहले ही खा चुकी हूँ । ऐसा सुनकर भाई के मन में पश्चाताप हुआ । उसने उसके पाँव पकड़े , बीती हुई

गलती की क्षमा माँगी। बहिन भी उस समय बहुत दुःखी हुई, और दोनों आपस में गले मिले। बाद में दोनों आनन्द से खाने बैठे। मन में शल्य था वह निकाल दिया। जिनकी कृपा के प्रभाव से अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई उन पद्मावती माताजी की दोनों कुल के छोटे-बड़े सभी कुटुम्बीजन सेवा करने लगे और अपनी अनगिनत सम्पत्ति का उपयोग अनेक व्रत उद्यापन, चतुर्विध संघ को दान, जिन मंदिर जिर्णोद्धार, सिद्ध क्षेत्र-क्षेत्राधिक सम्बन्धी धर्मकार्यों में करने लगे। सहस्त्रनाम मंत्र का क्रम से कुंकुम अर्चन करने लगे। इन सब परिणामों को देखकर वहाँ के राजा ने भी भक्ति से दृढ होकर जिनधर्म की खूब ठाट-बाट से प्रभावना की। बाद में थोड़े समय में सर्व कुटुम्बीजनों ने राजा सहित जिन दीक्षा धारण कर घोर तप किया। और वे चतुर्गति का नाशकर अंत में मोक्ष गए।

।।इतिसप्त शुक्रवार व्रत विधान कथा सम्पूर्ण ।।

सर्वोपद्रव-शान्तिकरण मंत्र

मंत्र :- ॐ अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापभावाणं होउ नमो। ॐ माई साहिं तो सव्व दुःक्खहरौ, जोहिजिणाणंपभावो पर मिट्‌डीणंच जंच माहप्पं संघं मि जोणुं भावो अवयर उज्लं मिसोइथ।

विधीः- इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्रित कर पिलाने से सर्वप्रकार के रोग, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत इत्यादि शांत होते है।

मंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं नमः ।

विधीः- इस मंत्र का सवालाख जाप करें तो सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। सर्व रोग शांत होते हैं।

मंत्रः- ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ।

विधीः- इस मंत्र का साढ़े बारह हजार जाप करने से क्षेत्रपाल प्रत्यक्ष दर्शन देकर वरदान देते हैं।

मंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रों ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधीः- धन तेरस की रात को ४० माला, चौदस को ४२ माला और दिवाली के दिन ४३ माला उत्तर दिशा करके, लाल माला से, लाल वस्त्र पहनकर करें तो

लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

मंत्र:- ॐ आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्यौं पद्मावत्यै नमः ।

विधि:- इस मंत्र का सवा लाख विधिपूर्वक जप करने से देवी स्वप्न में दर्शन देती हैं ।

मंत्र:- ॐ ऐं श्री क्लीं वद्-वद् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।

विधी:- इस मंत्र की ५ माला नित्य फेरने से व्यक्ति अतिशय बुद्धिमान होता है । विद्या बहुत आती है ।

सरसों, हींग, नीम के पत्ते, वच और सर्प की केंचुली इन सबको कूटकर धूप बना लें व उस धूप को खेने से शाकिनी आदि दोष दूर होते हैं ।

सफेद आक (अर्क) की जड़ को कान में बाँधने से सर्प विष दूर होता है । श्वेत कंटकारि की जड़ को पुष्य नक्षत्र में लेकर एक वर्ण वाली गाय के दूध के साथ पीएँ तो बंध्या भी पुत्रवती होती है ।

क्रीडाभूः सुकृतस्य दुष्कृत रजः संहारवास्याभवो
दन्वन्नौ र्व्यसनाग्नि मेघपटली संकेतदूसती श्रियाम ।
निःश्रेणीस्त्रिदिवौकसः प्रियसखीमुक्तेः कुगत्यर्गला,
सत्वेषु क्रियतां कृपैव भवतु क्शेशैरशैषैः परै ।।

अर्थ:- चाहे लाखों कष्ट सहन करने पड़े किन्तु दया का सदैव अनुष्ठान करना उचित है । यह दया पुण्य का क्रीड़ा क्षेत्र है, पापरुपी रज को उड़ाने के लिए आंधी है । संसार रुपी समुद्र से पार जाने के लिए नौकारुप है । व्यसन (दुःख) रुप अग्नि शान्त करने के लिए मेघमाला है, सर्वसम्पदा रुप नायिकाओं के लिए संकेत की दूती, स्वर्ग की सीढ़ी, मुक्ति रमा की प्यारी सहेली तथा कुगति की लगाम है ।

लेखक की कृति - 'विश्व धर्म में अहिंसा' - से साभार

महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट - प्रद्योतरत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांभोधी-न्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यानुगतास्ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे(ते) मंगलम ।। १ ।।
सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्ति श्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः
धर्मः सूक्तिसुधाच चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। २ ।।
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराः विंशति -
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। ३ ।।
देव्योऽष्टौच जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। ४ ।।
ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टौविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋध्दीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। ५ ।।
कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। ६ ।।

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररुप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। ७ ।।
योगर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवोः यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम ।। ८ ।।
इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ कामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मी ।। ९ ।।
।। इति श्री मंगलाष्टकम ।।

पंचामृत अभिषेक पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हम ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ।। १ ।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तावनाय पुष्पाजंलिः ।।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर आभूषण और यज्ञोपवीत धारण करना)

श्रीमन्मन्दरसुन्दरे (मस्तके) शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्त्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जन्माभिषेकोत्सवे ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा ।

ॐ नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा ।

(तिलक लगाने का श्लोक)

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ् कृतेन
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्यं
पादरविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं तिलकं करोमि स्वाहा ।।

(भूमि प्रक्षालन का श्लोक)

ये सन्ति केचिदिहदिव्यकुलप्रसूता,
नागा प्रभूतबलदर्पयुता भुवोऽधः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा ।।

(पीठ प्रक्षालन का श्लोक)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम ।
अत्युद्यमुघतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसम्भवतापहारि ।। ५ ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(पीठ कर श्रीकार वर्ण लेखन)

श्री शारदासुमुखनिर्गतबीजवर्ण
श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं ।
श्रीमत्स्वयं क्षपति तस्य विनाशविघ्नं ।
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा ।

(अग्निप्रज्वलन क्रिया)

दुरन्तमोहसन्तानकान्तारदहनक्षमम ।
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लविताम्बरम ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा ।।

(दशदिक्पाल का आहवान)

इन्द्राग्निदंडधरनैऋतपाशपाणि -
वायूत्तरेण शशिमौलिफणीन्द्रचन्द्राः ।
आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिन्हाः ।
स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ।। ८ ।।

।। दशादिक्पाल के मंत्र ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ, इन्द्राय स्वाहा ।। १ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ, अग्नेय स्वाहा ।। २।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ, यमाय स्वाहा ।। ३ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैर्ऋत्य आगच्छ आगच्छ, नैर्ऋताय स्वाहा ।। ४ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ, वरुणाय स्वाहा ।। ५ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ, पवनाय स्वाहा ।। ६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ आगच्छ, कुबेराय स्वाहा ।। ७ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ, ऐशानाय स्वाहा ।। ८ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ आगच्छ, धरणेन्द्राय स्वाहा ।। ९ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ, सोमाय स्वाहा ।। १० ।।

(दिग्पाल का अर्घ)

नाथ त्रिलोकहिताय दशप्रकार -
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय ।
अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय,
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षत यज्ञभागं च यजामे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।

(क्षेत्रपाल को अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनपः प्रतिमांकपाल ।
दंष्ट्राकराल जिनशासनरक्षपाल ।।
तैलादिजन्मगुडचन्दनपुष्पधूपै -
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञकाले ।।

विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतोदघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः ।
पटहपटुतरौघैः वस्त्रसदभूषणौघैः
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ।। १० ।।

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र-वीरभद्र-मणिभद्र-भैरवापराजित-पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्य पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षत यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा ।

(भगवान के चरणो में पुष्पांजलि)

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्ति,
सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पांजलिं मलयजार्दमुपाक्षिपेऽहम ।। ११ ।।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत ।।

(चार कलश स्थापन और कलशों में जलधार देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरुप्य -
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ।।१२।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरित नवरत्नगंधपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरू कुरू झौं झौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं असि आउसा नमः स्वाहा ।

(अभिषेक के लिए प्रतिमाजी को अर्ध चढाना)

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकै श्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।। १३ ।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद् गुणसहिताय अर्हत्परमेष्टिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

(बिम्ब स्थापना)

य: पांडुकामलशिलागतमादिदेव
मस्नापयन् सुरवरा: सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहम क्षततोयपुष्पै:
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बम् ।। १४ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा ।

(मुद्रिका स्वीकार)

प्रत्युप्तनीलकुलिशोत्पलपद्मराग -
निर्यत्करप्रकरबध्दसुरेन्द्रचापम् ।
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले ।
रत्नाडलीयकमहं विनिवेशयामि ।। १५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा नम: मुद्रिकाधारणं ।।

(जलभिषेक १)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि -
संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम
प्रस्वेदतामपमलमुक्तमपि प्रकृष्टे -
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे ।। १६ ।।

मंत्र:- (१) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेकयामि स्वाहा ।

मंत्र:- (२) ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसन्तं वृषभादि वर्धमानान्तं चतुर्विशंतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ---देशे --- नाम नगरे एतद्---- जिनचैत्यालये सं --- मासोत्तम मासे --पक्षे तिथौ---वासरे पशस्त-ग्रहलग्न-होरायां मुनि - आर्यिका -श्रावक-श्रविकाणाम सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा । इति जलस्नपनम ।

नोट:- पिछले पृष्ठ के मंत्र संख्या १३ में से कोई एक मंत्र बोलना चाहिए। अर्घ-उदक-चंदन-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(शर्कराभिषेक २)

मुक्त्यंगनानर्मविकीर्यमाणै:
पिष्टार्थकर्पूररजोविलासै: ।
माधुर्यधुर्यैंवरशर्करोघैर्भक्त्या
जिनस्य वरसंस्नपनं करोमि ।। १७ ।।

मंत्र:- ॐ ह्रीं --- इति शर्करास्नपनम ।

अर्घ- उदकचन्दन---अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चै:,
हस्तै: श्च्युता सुरवरासुरमर्त्यनाथै: ।।
तत्कालपीलितमहे क्षुरसस्य धारा,
सद्य: पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान ।। १८ ।।

मंत्र:- ॐ ह्रीं ---- इति इक्षुरसस्नपनम ।

अर्घ-उदकचन्दन--अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

नारिकेलजलै: स्वच्छै: शीतै: पूतैर्मनोहरै: ।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिन: ।। १९ ।।

मंत्र:- ॐ ह्रीं ---इति नालिकेररसस्नपम ।

अर्घ-उदकचन्दन---अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सुपक्वै: कनकच्छायै: सामोदैर्मोदकादिभि: ।
सहकाररसै: स्नानं कुर्म: शर्मैकसद्मन: ।। २० ।।

मंत्र:- ॐ ह्रीं ---- इति आम्ररसस्नपम ।

अर्घं - उदकचन्दन --- अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(घृताभिषेक ३)

उत्कृष्टवर्ण-नव-हेम-रसाभिराम -
देहप्रभावलयसङ् गमलुप्तदीप्तिम् ।
धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां
वन्देऽर्हतां सुरभि संस्नपनोपयुक्ताम् ।। २१ ।।

मंत्र:- ॐ ह्रीं--- इति घृतस्नपमनम ।

अर्घ-उदकचन्दन---अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दुग्धाभिषेक - ४)

सम्पूर्ण-शारद-शशांकम रीचीजाल-
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः ।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिंच्यमानाः ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ।। २ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं ---- इति दुग्धाभिषेकस्नपनम ।

अर्घं-उदकचन्दन---अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दध्यभिषेक ५)

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि -
पाण्डुत्वकांतिमवधीरयतामतीव
दध्नां गता जिनपतेः प्रतिमां सु धारा,
सम्पद्यतां सपदि वांछितसिद्धये नः ।। २३ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं ---इति दधिस्नपनम ।

अर्घ-उदकचन्दन---अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

(सर्वौषधि ६)

संस्नापितस्य घृतदुग्घदधीक्षुवाहैः
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्जवलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला -
कालेयकुंकमरसोत्कटवारिपूरैः ।। २४ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं ---इति सर्वोषधिस्नपनम ।

अर्घ-उदकचन्दन--अर्घनिर्वपामीति स्वाहा ।।

(चर्तुःकोणकुंभकलशाभिषेकः ७)

इष्टै र्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां,
पूर्णै सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानै ।
संसार सागर विलंघनहेतु सेतुमाप्लावये,
त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम ।। २५ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं --- इति चतुःकोणकुम्भकलशस्नपनम ।

अर्घ - उदकचन्दन---अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

(चन्दनलेपनम ८)

संशुद्धशुद्धया परया विशुद्धया, कर्पूरसम्मिश्रितचन्दनेन ।
जिनस्य देवासुरपूजितस्य, विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ।। २६ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं ---इति चन्दनलेपनं करोमीति स्वाहा ।

अर्घ - उदकचन्दन--- अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

(पुष्पवृष्टि - ९)

यस्य द्वादशयोजने सदसि, सद्‌गंधादिभिः स्वोपमा -
नप्यर्थान्सुमनो गणान्सुमनसा वर्षति विश्वक् सदा ।
यः सिद्धिं सुमनः सुखं सुमनसां स्वं ध्यायतामावह -
त्तं देवं सुमनोमुखैश्च सुमनौभेदैः समभ्यर्चये ।। २७ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं सुमनः सुखप्रदाय पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा ।

(मंगल आरती १०)

दध्युज्जवलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः,
पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।
त्रैलोक्यमंगल सुखालयकामदाह
मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ।। २८ ।।
(इति मंगल आरती अवतरणम)

(पूर्णसुगंधितकलशाभिषेक ११)

द्रव्यैरनल्पघनसार चतुःसमाढ्यै
रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः ।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां
त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ।। २९ ।।

मंत्रः- ॐ ह्रीं ---इति पूर्णसुंगधिजलस्नपनम ।

अर्घ-उदकचन्दन--- अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

अथ शांति मंत्र

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः । ॐ नमोऽर्हते भगवते । श्रीम पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यापवित्राय । सर्वज्ञाय । स्वयंभुवे । सिद्धा । बुद्धाय । परमात्मने । परमसुखाय । त्रैलोक्य महीव्याप्ताय । अनन्तसंसारचक्र परिमर्दना । अनंतदर्शनाय । अनंतज्ञानाय । अनंतवीर्याय । अनन्तसुखाय सिद्धाय, बुद्धाय त्रैलोक्यवंश कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यायिका- श्रावक-श्राविकाप्रमुख-चतुस्संघोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय अघातिकर्मविनाशनाय, अपवायं अस्माकं छिंद छिंद, भिंद भिंद । मृत्युं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । अतिकाम छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द ।रतिकामं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । क्रोध छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । अग्नि- छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वशत्रुं- छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वराजभयं- छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वविघ्नं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वभयं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वचौरभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वदुष्टंभयं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वमृगभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वमात्मचक्रभयं -छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वपरमंत्रं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वशूलरोगं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वभयरोगं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वकुष्ठरोगं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वक्रूर रोगं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वनरमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । गजमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वाश्वमारी - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वगोमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वमहिषमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वधान्यमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्ववृक्षमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द ।सर्वमंगलमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वपत्रमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वपुष्पमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वराष्ट्रमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वदेशमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वविषमारीं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्ववेतालशाकिनीभयं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्ववेदनीयं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वमोहनीयं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द । सर्वकर्माष्टकं - छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द ।

ॐ सुदर्शन-महाराज-चक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यशांतिं कुरु कुरु । सर्वजनानन्दनं कुरु कुरु । सर्वभव्यानन्दनं कुरु कुरु । सर्वगोकुलानंदन कुरु कुरु । सर्वग्रामनगरखेट, कर्वटमटंबपत्तद्रोणमुखसंवाहानदनं कुरु कुरु । सर्व लोकानन्दनं

कुरु कुरु । सर्वदेशानन्दनं कुरु कुरु । सर्व जयमानानन्दनं कुरु कुरु। सर्वदु:खं हन, हन, दह, दह, पच, पच, कुट, कुट, शीघ्र, शीघ्र।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितम ।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ।।

शिवमस्तु । कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु । चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य मल्लिवर्धमान पुष्पदन्त शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः ।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहशान्त्यर्थ गन्धादकधारावर्षणम्)
(गन्धोदकवन्दनमंत्र:)

निर्मलं निर्मलीकरं पवित्रं पापनाशनम ।
जिनगन्धोदकं वन्दे कर्माष्टकनिवारणम ।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथय शांतिकराय, सर्वपापप्रणानशनाय, सर्वविघ्नविनाशाय, सर्वरोगोपसर्गापमृत्युविनाशनाय, सर्व परकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशाय सर्व क्षामडामरविनाशाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हं नमः सर्वशान्ति कुरु कुरु वषट् स्वाहा ।

।। इति महाशांतिमंत्र ।।

यस्तु प्राणिवधं कृत्वा मांसेन तर्पयेत पितृन ।
सोऽविद्वन चन्दनं दग्ध्वा कुर्यापङ्गार विक्रयम ।।
क्षिप्त्वा कूपे तथा किश्चित वाल आदातु मिच्छति ।
पतत्य ज्ञानतः सोऽपि मांसेन श्राद्धकृत तथा ।।

अर्थ - जो पुरुष प्राणी का वध कर मांस से पितरों की तृप्ति करना चाहता है वह मूर्ख चन्दन को जलाकर कोयलों को बेचना चाहता है । और किसी पदार्थ को कुएँ में डालकर फिर उसे लेने की इच्छा से बालक जैसे अज्ञानवश स्वयं कुएँ में गिर पड़ता है, वैसे ही मांस से श्राद्ध करने वाले अज्ञान के प्रभाव से दुर्गति को पाते हैं ।

(लेखक की कृति -'विश्व धर्म में अहिंसा' से साभार)

पूजा प्रारंभ

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।। १ ।।

ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः । (पुष्पांजलिं क्षिपेत)

चत्तारि मंगलं-अरिहंता मंगलं,
सिद्धामंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तुमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा,
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंता सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धेसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। १ ।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचि ।। २ ।।
अपराजित - मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।। ३ ।।
एषो पंच -णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मंगलं ।। ४ ।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रम्हावाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।। ५ ।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्र नमाम्यहं ।। ६ ।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।। ७ ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत)

पंचकल्याण अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण-पच्चकल्याणकेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्योऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।। २ ।।

(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्त्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिए । नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ चढ़ाना चाहिए)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्त्रनामेभ्योऽर्घ्य निर्वापामीति स्वाहा ।

(स्वस्ति मंगल)

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम ।
श्रीमूलसंघ-सदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाभ्यधायि ।। १ ।।

स्वस्तित्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति-प्रसन्न-ललिताद्भूत-वैभवाय ।। २ ।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।। ३ ।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्य वल्गन,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं ।। ४ ।।

अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तुन्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाजलिं क्षिपेत ।

(यहाँ पर प्रत्येक भगवान के नाम के पश्चात पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्री श्रेयान स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्री धर्म स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः ।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलि क्षिपेत ।

नित्याप्रकंपाद्भूत-कैवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बल-प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। १ ।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए)

कोष्ठस्थ- धान्यापममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि ।

चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः ।। २ ।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।

दिव्यान मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ३ ।।

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।

प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयोः नः ।। ४ ।।

जंघावलि -श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसुन-बीजांकुर-चारणाहूवाः ।

नभोऽङ्गण -स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।। ५ ।।

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनोः गरिम्णि ।

मनो - वपुर्वाग्वलिनश्च नित्य, स्वस्ति-क्रियासु परमर्षयो नः ।। ६ ।।

सकामरुपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्मर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।

तथा प्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ७ ।।

दीप्तं चत्तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः

ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति-क्रियासु परमर्षयो नः ।। ८ ।।

आमर्ष -सर्वोषधयस्तशीर्विषंविषा दृष्टिविषं विषाश्च ।

सखिल्ल-विडजल्ल-मलौषधीशाःस्वस्ति-क्रियासु परमर्षयो नः ।। ९ ।।

क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो मधुस्त्रवंतोप्यमृतं स्त्रवंतः ।

अक्षीणसंवास - महानसश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ।। १० ।।

।। इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं ।।

नव देवता पूजा

गीत छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं ।
जिन धर्म जिन आगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं ।
नव देवता ये मान्य जग में हम सदा अर्चा करें ।
आह्वान कर थापें यहाँ मन में अतुल श्रद्धा करें ।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैतयालय समूह ---- अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं ---- अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं ---- अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा ।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूँ मुदा ।
नवदेवताओं कीसदा जो भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगलपाय शिवकांता वरें ।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिन धर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलं ।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता ।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता ।। नव. २ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिन धर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षीरोदधि के फेन सम सित तंदुलों को लायके ।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सु चढायके ।। नव. ।।

ॐ ह्रीं ---- अक्षतं ---- ।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये ।।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं ---पुष्पं ---- ।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में ।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूँ नत भाल मैं ।। नव. ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं ---नैवेद्यं ----।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में ।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं ।। नव. ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं ---दीपं ---- ।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा ।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा ।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं ---धूपं----।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में ।
उत्तम अनुपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं ।। नव. ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं ---फलं----।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले ।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ से पूजत मिले ।। नव. ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं ---अर्घ्य----।

दोहा - जलधारा से नित्य मैं, जगकी शांति हेत ।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत ।। १० ।।
शांतये शांतिधारा ।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय ।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढाय ।। ११ ।।
दिव्या पुष्पांजलिः ।

जाप्य (९, २७ या १०८ बार)

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः ।

जयमाला

सोरठा

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो ।
गाॐ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा ।। १ ।।

(चला - हे दीनबंधु श्रीपति)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे ।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे ।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ ।। २ ।।
आचार्य देवगुण छत्तीस धार रहे हैं ।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं ।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी ।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा ।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा ।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे ।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें ।। ४ ।।
जिन धर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा ।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा ।
जिनकी ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे ।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे ।। ५ ।।
जिन चैत्यकी जो वंदना त्रिकाल करै हैं ।
वे चित्स्वरुप नित्य आत्म लाभ करे हैं ।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें ।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें ।। ६ ।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें ।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें ।

मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ ।। ७ ।।

दोहा

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः ।

गीताछन्द

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से नवदेवता पूजा करें ।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें ।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते ।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते ।। ९ ।।

इत्याशीर्वादः

भूतकाल साक्षी है, वर्तमान में वास्तविक है, अनुभव से सिद्ध है कि महापुरुषों ने जो आदर्श प्रस्तुत किया है, जिस संस्था/संगठन/मिशन/संघ कानिर्माण किया । उसके निमित्त से ही अनेक झगड़े फूट, मनोमालिन्य, अनादर्श, युद्ध हत्यायें हुई हैं । एक धर्म-सम्प्रदाय अन्य धर्म-सम्प्रदाय से, एक राष्ट्र अन्य राष्ट्र से, एक जाति अन्य जाति से, एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति से स्वयं को श्रेष्ठ मानता है, यह एक विचित्र सत्य है । दूसरों से घृणा करके स्वयं घृणित हो जाता है और घृणा के पात्र बन जाता है । इससे विरीत अपवाद रुप से कुछ व्यक्ति दूसरों से मित्रता का व्यवहार करते हैं वे ही दूसरों से पूज्यनीय बनते हैं । महान् बनते हैं ।

'नग्न सत्य का दिग्दर्शन' से आभार

पद्मावतीपूजा मंडल प्रारंभ

प्रथम पूजा श्री पाश्र्वनाथ पूजा

गीताछन्द

वरस्वर्ग प्राणत विहाय, सुमात वामा सुत भये ।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर, चरण जिनके सुर नये ।।
नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसै ।
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसै ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री पाश्र्वनाथ जिनेन्द्राय । अत्र अवतर अवतर, सर्ववषट् ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ: ठ: ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ: ठ: ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक - नाराच छन्द

श्रीरसोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेम पात्र धारिकैं सु आपको चढाइये ।
पाश्र्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।। १ ।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल. ।

चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिए ।
आप चरण चर्च मोहताप को हनीजिये ।। पाश्र्व. ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं. ।

फेन चन्द के समान अक्षतान् लाइकैं ।
चर्न के समीप सार पुंजको रचाइकैं ।। पाश्र्व. ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं. ।।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइकैं ।
धार चर्न के समीप कामको नसाइकैं ।। पार्श्व. ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं. ।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने ।
आप चर्न चर्चते क्षुधादि रोग को हनै ।। पार्श्व. ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

लाय रत्नदीप को सनेहपूर के भरूँ ।
वातिका कपूर वारि मोह ध्वांत कूँ हरूँ ।। पार्श्व . ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं. ।

धूपगन्धलेय कै सु अग्निसंग जारिये ।
तास धूप के सुसंग अष्ट कर्म बारिये ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं ।

खारिकादि चिरभटादि रत्नथाल में भरूँ ।
हर्ष धारिकै जजूँ सुमोक्ष सौख्य वरूँ ।। पार्श्व. ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्तये फलं ।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिए ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तै जजीजिये ।। पार्श्व. ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं. ।

पंच कल्याणक व अष्टदिशा के अर्घ १३

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।
वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्ननिवारी ।। १ ।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा द्वितीयायां गर्भमंडल मण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यः।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशी पौष विख्याता ।
स्यामा तन अद्‌भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ।। २ ।।

ॐ ह्रीं पोषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।

कलि पौष एकादशि आई, तब बारह भावन भाई ।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं पोष कृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायार्घ्यम् ।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं चैतकृष्णचतुर्थी दिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथायार्घ्यम् ।

सित सातै सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजै मोक्ष कल्याना ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला सप्तम्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथाया-अर्ध्यम् ।

अष्टदिक पार्श्वनाथ के आठ अर्घ

पूर्वदिशा में स्थित जिनेश्वर । पार्श्वनाथ दु:ख हारी ।
अष्टद्रव्य ले अर्घ चढाऊँ, भव दु:ख नाशन कारी ।। १ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वदिशा में स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्य ।। १ ।।

आग्नेयदिशा के क्षेत्रविराजो पार्श्वनाथ जिनदेवा,
अष्ट द्रव्य ले पूजा रचाउँ, सुखीकरो जिन देवा ।। २ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निदिशा में स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्य ।। २ ।।

दक्षिणदिश में पार्श्व जिनेश्वर वसुविधपूजा रचाऊँ,
नाच नाच, कर पुण्य बढाऊँ मोक्षपुरी के जाऊँ ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणदिशामें स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्यं ।। ३ ।।

नैर्ऋत्यकोण में स्थित जिनेश्वर पार्श्वनाथ दु:ख हारी ।
वसुविध द्रव्यचऊँ जिनवर दु:खहारी सुखहारी ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं नैर्ऋत्य कोण स्थिपार्श्वनाथाय अर्घ्यं ।। ४ ।।

पश्चिम दिशा में पार्श्वविराजे, हरीतवर्ण सुखकारी ।
अष्ट द्रव्य ले पूजा रचाऊँ, अष्ट कर्म नस जाई ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं पश्चिम दिशा में स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्य ।। ५ ।।

पवनदिशा के पारस पूजूं मन वचन तन सुखदायी
सुवर्णथाल में द्रव्य सजाकर पूजूँ जिन सुखदायी ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवनदिशा स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्यं ।। ६ ।।

उत्तर दिशा के पार्श्वनाथ की वसुविधि पूजा रचाऊँ,
जल गंधादिक सुवर्ण थाल में भरकर पूजा रचाऊँ ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तरदिशा में स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्यं ।। ७ ।।

ईशान दिशा में स्थित जिनेश्वर पार्श्वनाथ सुखदाई
अष्ट द्रव्य ले अर्घ्य चढाऊँ भक्तों के सुख दाई ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशान दिशा स्थित पार्श्वनाथाय अर्घ्य ।। ८ ।।

आठों दिशा में सामुहिक रूप में पार्श्व की पूजा रचाऊँ ।
आठों कर्म के नासन हेतु पूर्ण अर्घ्य चढाऊँ ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं आठों दिशा में स्थित पार्श्वनाथ पूर्ण अर्घ्य ।। ९ ।।

९ बार जाप्य करें जाप्य मंत्र से ।

ॐ ह्रीं समस्थसिद्ध क्षेत्रअतिशयक्षेत्र स्थित पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा ।

शांति धारा पुष्पवृष्टि कर मन में अति हर्षाऊँ,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वसुविधिकर्म खपाऊँ ।।

।। इति शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

पारसनाथ जिनेन्द्र तने वच, पौनभखी जरते सुन पाये ।
कर्‌यो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये ।।
नाम प्रताप टरै संताप सु भव्यन् को शिवशर्म दिखाये ।
हे विश्वसेन के नन्द भले, गुणगावत हैं तुमरे हरषाये ।। १ ।।
दोहा - केकी- कंठ समान छबि, वपु, उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहार पग, वन्दों पारसनाथ ।। २ ।।

पद्धरि छन्द

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुँ गोपुर शोभ अपार ।
सुकोट तनी रचना छबि देत, कंगूरन पै लहकैं बहु केत ।। ३ ।।
बनारस की रचना जु अपार, करी, बहु भाँति धनेश तैयार ।
तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार, करै सुख वाम सु दे पटनार ।। ४ ।।
तज्यो तुम प्रानत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन ।
तबै सुरइन्द्र-नियोगिन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सुजाय ।। ५ ।।
पिता घर सौंपि गये निज धाम, कुबेर करै वसु जाम सुकाम ।
बढै जिन दोज मयंक समान, रमै बहु बालक निर्जर आन ।। ६ ।।
भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महासुखकार ।
पिता जब आनकरी, अरदास करो तुम ब्याह वरो मम आस ।। ७ ।।
करी तब नाहिं, रहै जगचन्द, किये तुम काम कषाय जु मन्द ।
चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग ।। ८ ।।

लखयो इक रंक करैं तप घोर, चहुँदिशि अगनि बलै अतिजोर । कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात करै बहुजीवन की मत घात ।।९ ।। भयो तब कौप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव । लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मरिषिसुर आय । तबैसुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निजकंद मनोग । कियो बन मांहिं निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंदकंद ।। गहे तहँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास । दियो पयदान महा-सुखकर, भई पनवृष्टि तहां तिहिंवार ।। १२ ।।

गये तब कानन मांहि दयाल, धरयो तुम योग सबहिं अघ टाल । तबै वह धूम सुकेतु अयान, भयो कमठाचर को सुर आन ।। १३ ।। करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब वैर विचार गहीर । कियो उपसर्ग भयानक घोर, चलो बहु तीक्ष्ण पवन झकोर ।। १४ ।। रह्यो दसहुँ दिशि में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहि जाय । सुरुण्डनके बिन मुण्ड दिखाय, पडै जल मूसलधार अथाय ।। १५ ।। तबै पद्मावति कंत धनिंद, नये जुग आय जहां जिनचन्द । भग्यो तब रंकसु देखत हाल, लह्यो तब केवलज्ञान विशाल ।। १६ ।। दियो उपदेश महा हितकर, सुभव्यन बोध समेद पधार । सुवर्णभद्र जहाँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिव-नारि लही वसुरिद्ध ।। १७ ।। जजूँ तुम चरन दोउ कर जोर, प्रभु लखिये अब ही मम ओर । कहे 'बखतावर रत्न' बनाय, जिनेश हमें भवपार लगाय ।। १८ ।।

घत्ता

जय पारस देवं, सुरकृत सेवं, वंदत चर्न सुनागपति । करुणा के धारी परउपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरणेन्द्र पूजा

पद्मावति देवि के प्रिय हो धरणेन्द्र नाम तुम्हारा ।
नागों के हो नाग नागेश्वर सहस्त्रफणा हे तेरा ।।

जिनशासन की रक्षा करते हम सब भक्त तुम्हारे
आह्वनन स्थापनकर तुम री करूँ भक्ति मैं देवा

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्रयक्ष स्वपरिवार सहित ।। १ ।।
अत्रागच्छसंवौषट् । अत्रतिष्ठतिष्ट ठः ठः
अत्रममसन्निहितोभव भव वषट् स्वाहा ।

१ सुवर्ण जारी भरकर लाया गंगा जल सुख कारी,
सात समुज्वल,मधुर सुशीतल प्यास बुझावन कारी,
ऐसे शीतल जल से पूजूँ मन वचन तन सुखकारी
धरणीधरश्री नागेश्वर को पूजूँ मन हर्षायी ।। २ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्रयक्ष स्वपरिवार सहिताय इदं जलं समर्पयामी स्वाहा ।। २ ।।

मलयागीर चंदन घिस लाया, शांत करन सुखकारी
शीतलता को देने वाला, सभी ताप नश जाई
सुवर्णकटोरी भरकर लाया, पूजूँ चरण सुखदाई,
धरणीधर श्री नागेश्वर को पूजूँ मन हर्षायी ।। ३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र यक्ष स्व परिवार राहिताय इदं गंधं समर्पयामि स्वाहा ।। ३ ।।

वासमति के चावल धोकर अक्षत करुँ सुखदाई,
अक्षय संपत्ति दे नागेश्वर सब संपत्ति सुखकारी,
सुवर्णथाल में भरकर लाया, अक्षत हे सुखकारी
धरणीधर श्री नागेश्वर को पूजूँ मन हर्षाई ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्रदेव स्वपरिवार सहिताय अक्षतं ।। ४ ।।

गुलाब केतकी मधुर मोगरा पुष्प चमेली लाया ।
सुगन्ध से युक्त पुष्प मनोहर चुन चुन करके लाया ।
अंजुलीभर कर के देव तुम्हारे चरणों में लेकर आया,
धरणी धर श्री नागेश्वर की पूजा कर हर्षाया ।। ५ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हे धरणेन्द्र देवाय स्व परिवार सहिताय पुष्पं ।। ५ ।।

लाडु पूड़ी और जलेबी, नानाविध के लाया,
सुवर्णथाल में भरकर स्वामी तुमको आज चढ़ाया,
पद्मावती के कंथ नागेश्वर तुमको आज रिझाया
धरणीधर श्री नागेश्वर की पूजा कर हर्षाया ।। ६ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हे धरणेन्द्र देवाय स्व परिवार सहिताय चरुं ।।६।।

घृत से पूरित दीपक जलाकर तुम चरणो में आया ।
अज्ञान कला का नाश करन को तुमरे चरणों आया ।
दीप प्रकाशित करके स्वामी दीपक लेकर आया ।
धरणीधर श्री नागेश्वर की पूजाकर हर्षाया ।। ७ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हे धरणेन्द्र देवाय स्व परिवार सहिताय दीपं ।। ७ ।।

धूपदशांगी कूट कूट कर स्वामी तुम ढ़ींग लाया
गंध सुगन्धित वास जलाकर तुमरे चरण चढ़ाया ।
शुद्ध अनल में खेयखेयकर तुमको आज रिझाया,
धरणीधर श्री नागेश्वर की पूजा कर हर्षाया ।। ८ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हे धरणेन्द्रदेवाय स्वपरिवार सहिताय धुपं ।। ८ ।।

आम सुपारी केला दाडिम, गुच्छगुच्छ ले लाया
मधुर मनोहर फल फलादिभर लेकर मैं तो आया,
सुवर्ण थाल में भरकर, स्वामी तेरे चरणों में आया,
धरणीधर श्री नागेश्वर की पूजा कर हर्षाया ।। ९ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हे धरणेन्द्रदेवाय स्व परिवार सहिताय फलं ।। ९ ।।

जल, चन्दन, अक्षत पुष्पादिक अर्घ्य बनाकर लाया
वसुद्रव्य को चढ़ा चढ़ाकर मन में अति हर्षाया ।।
पद्मावती के कंथ नागेश्वर तीन लोक में छाया,
धरणीधर श्री नागेश्वर की पूजा कर हर्षाया ।। १० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र देवाय स्व परिवार सहिताय अर्घ्यं।।१०।।

शांतिधारा, पुष्पांजलि.

अर्घ्य नागेन्द्रों के राजा तुम हो नाम धरणेन्द्र कहाये ।
जिनशासन की सेवा करते पूजा करने आये ।।
जल फलादिक वसु द्रव्यसजाकर कनकथाल में लाय ।
धरणेन्द्रदेव को अर्घ्य चढ़ाकर, मनवांच्छित फल पाये ।। ११ ।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हे धरणेन्द्रदेवाय स्व परिवार सहिताय अर्घ्यं ।।११।।

शांति धारा, पुष्पांजलि।।

पद्मावती पूजा

पद्मावती की पूजा प्रारंभ

श्री पार्श्वनाथ जिन भक्त कृतोपसेवा ।
धरणेन्द्र प्रिय जिननाथ, कृतोपसेवा ।
कमठोपसर्ग कृत दूर जिनोपसेवा ।
पद्मावती कृत सहाय, सुखोपसेवा ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती देवी अत्रागच्छ - २
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती देवि अत्र तिष्ठ - २
ॐ आं क्रौं ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती देवि अत्र सन्निहितो भव-भव ।

पद्मावती आहवानन मंत्र:

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमत पार्श्वचन्द्राय त्रैलोक्य विजयालंकृताय, सुवर्ण वर्ण धरणेन्द्र नमस्कृताय, नीलवर्णाय, कर्मकान्तारोन्मूलन मत्तमत्तङ्गजाय, संसारोतीर्णाय, प्राप्त परमानन्दाय, तत्पादारविन्द सेवा । हे वाक चंचरीकोप में मानव देव दानव विनम्र मौलिमुकुट मण्डली मयूख मंजरी रंजितांधिपीठे सेवक जन वांच्छितार्थ पूरणाधरीकृतचिंतामणि कामधेनु कल्प लते: विकएज्जपाकु सुमोदितार्क पद्मरागारूण देह प्रभाभासुरीकृत समस्ताकाशादिक चक्रवाल लीला निद्रलित रौद्र दारिद्रोपद्रवे शरणागत त्राणकारिणी, दैत्योपसर्ग निवारिणी, भूत-प्रेत-पिशाच-यक्ष राक्षसाकाश जल,स्थल देवता, दोष निर्णाशिनी, मातृमुदगल चेटकोग्रग्रहण शाकिनी योगिनी वृन्द वेताल रेवती पीड़ा प्रमर्दित परविद्या मंत्र यंत्रोच्छेदिनी, पर सैन्यविध्वंसिनी स्थावर जंगम विष संहारिणी सिंह - शार्दूलव्याघ्रोरग प्रमुख दुष्टसत्व भयापहारिणी, कास-श्वास, ज्वर-भगंदर श्लेष्मवातपित्त कंडूकामल क्षयो दुम्बर प्रसुति प्रमुख रोग विध्वंसिनी, चोरानल जल राजगृहावच्छेदिनी, एकाहिन द्वयाहिन त्र्याहिन चातुर्थिक भौतिक वातिक सान्निपातिक पैत्तिक ज्वरोच्चाटिनी, त्रिभुवन जन मोहिनी, भगवती श्रीपद्मावती महादेवी एहि एहि आगच्छ प्रसादं कुरु कुरु (वषट्) सर्व काम करी (वषट्) मम सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु मम सर्वरोगोपद्रवं हूँ फट् ।

(इस आह्वानन मंत्र का स्मरण तब करें, जब देवीजी को आकर्षित करना हो)

पद्‌मावती माला मंत्र लघु

ॐ नमो: भगवते श्रीपार्श्वनाथाय ह्रीं पद्मावती सहिताय, धरणोरगेनद्र नमस्कृताय, सर्वोपद्रव विनाशनाय, परिविद्याच्छेदनाय, परमंत्र प्रणाशनाय, सर्वदोष निर्दलनाय, मम आकाशान बंधय-२ पातालान बंधय-२ देवान बंधय-२ चाण्डाल ग्रहान बंधय-२ भगवन क्षेत्रपालदुष्ट ग्रामवासी बंधय-२ डाकिनी बंधय-२ लाकिनी बंधय-२ जाकिनी बंधय-२ ग्रहीत मुक्तकाम बंधय-२ दिव्य योगिनी बंधय-२ बज्र योगिनी बंधय-२ खेचरी बंधय-२ भूचरीम बंधय-२ नागान बंधय-२ वर्ण राक्षसान बंधय-२ जोटिगान बंधय-२ मुग्दल ग्रहान बंधय-२ व्यतंर बंधय-२ आकाशदेवी बंधय-२ जलदेवी बंधय-२ स्थलदेवी बंधय-२ गोत्रदेवी बंधय-२ एकाहिक द्वयाहिक -त्रायहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर, रात्रि ज्वर, सर्वज्वर, मध्याह्न ज्वर, वेला ज्वर,वातिक-पैतिक श्लेष्मिक-सन्निपातिक-सर्वदोष, देव कृत-मानव कृत यंत्रकृत कार्मण उच्छेदय-विस्फोट्य-२ मम सर्व दोषान सर्व भूतान हन-हन दह-दह पच- पच भस्मी कुरु कुरु स्वाहा घे घे हूँ फट् फट् ।

पद्‌मावती माला मंत्र: (वृहत)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय, सर्वलोक ह्दयानन्द कारिणी, भृंगी देवी सर्व सिद्धि विद्या विधायिनी , कालिका सर्व विद्यामन्त्र यंत्र मुद्रा स्फेटिनिकरालि सर्व पर द्रव्ययोग चूर्ण मथिनी, सर्वविष प्रमर्दिनी देवि । अजिताया: स्वकृत विद्या मंत्र तंत्र योग चूर्ण रक्षिणि, जृम्भे पर सैन्य मर्दिनि, नोमोदानन्द दायिनी, सर्वरोग नाशिनि, सकल त्रिभुवानन्द कारिणि, भृंगी देवि सर्वसिद्ध विद्या विधायिनी, महामोहिनी, त्रैलोक्य संहार कारिणि, चामुण्डि ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वग्रह निवारिणी, फट् फट् २ कम्प २ शीघ्र चालय २ बाहु चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय सर्वाङ्गंचालय २ लोलय २ धुन २ कम्प २ कम्पय २ सर्वदुष्टान विनाशय २ सर्वरागान विनाशय २ जय-विजये, अजिते, अपराजिते, जम्भे मोहे स्तम्भे, स्तम्भिनि, अजिते ह्रीं २ हन २ दह २ पंच २ पाचय २ चल २ चालय २ आकर्षय २ आकल्प २ विकल्प २ क्ष्म्ल्व्र्यूँ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: हूं फट फट फट निग्रह ताड्य २ कम्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं हूं क्रों क्षं क्षौं क्ष: क्ष: ह: २ स: २ ध: २ स २ भ्म्ल्व्र्यूं हूं २ धर २ कर २ हूं फट फट फट ॐ शंख मुद्रया धर २ य्म्ल्व्र्यूं पुर हूं फट्

कठोर मुद्रया मारय २ ग्राह्य २ क्ष्म्ल्व्र्यूं हर हर स्वस्तिक मुद्राताडय २ । रम्ल्व्र्यूं पर २ प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धग २ धूमान्धकारिणि रां रां प्रां प्रां क्लीं हः २ वः २ आं नंद्यावर्त मुद्रया त्रासय २ । क्ष्म्ल्व्र्यूं शंख चक्र मुद्रया छिदीं २ भिंदि २ ग्म्ल्व्र्यूंः गः त्रिशुला मुद्रया छेदय २ भेदय २ घ्म्ल्वर्यूं धः चन्द्र मुद्रया नाशय २ व्म्ल्व्र्यूं मुशल मुद्रया ताडय २ पर विद्यां छेदय २ पर मंत्र भेदय २ ध्म्ल्वर्यूं धम २ बन्धय २ भेदय २ हलमुद्रया पः २ वः २ यं कुरु २ व्म्ल्वर्यूं व्रां व्रीं व्रूं व्रौं व्रः समुद्रे मज्जय २ हम्ल्व्र्यूं छां छीं छौं छः अंत्राणि छेदय छेदय पर सैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षां क्षः क्षः हूं २ फट्फट् पर सैन्य विध्वंसय २ मारय मारय, दारय दारय, विदारय विदारय गतिं स्तम्भय २ भ्म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रौं भ्रः श्रवय २ श्रवय २ । ट्म्ल्वर्यू यः प्रेषय २ पं छेदय २ द्वेषय २ विद्वेषय २ स्म्ल्वर्यूं स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रौं स्त्रः श्रावय २ । मम रक्षां रक्ष २ पर मंत्र क्षोभय २ छेद २ छेदय भेद २ सर्व यंत्र स्फोटय २ मं मं म्म्ल्व्र्यूं म्रां म्रीं म्रौं म्रः जृम्भय २ स्तम्भय २ दुःखय २ दुःखाय २ ख्म्ल्व्र्यूं ख्रां ख्रीं ख्रौं हाः ग्रीवां भंजय २ मोहय २ तम्ल्व्र्यूं त्रां त्रीं त्रूं त्रौं त्रः त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ सर्वाग्ड़ स्तम्भय २ चल २ चालय २ भ्रम २ भ्रामय २ धूनय २ कम्पय २ आकम्पय २ भम्ल्व्र्यूं स्तम्भय २ गमनं स्तम्भय २ सर्वभूतं प्रमर्दय २ सर्व दिशां बंधय २ सर्व विघ्नान् छेद २ निकृन्तय २ सर्वदुष्टान् निग्राहय २ सर्व यंत्राणि स्फोट २ सर्व श्रृंखलान् त्रोटय २ मोटय २ सर्व दुष्टान् आकर्ष हम्ल्व्र्यूं हं हीं हूं हौं हंः शान्ति कुरु २ तुष्टिं कुरू २ पुष्टिं कुरू २, स्वस्ति कुरू २ ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रौं हः पद्मावती आगच्छ २ सर्व भयात् मम रक्ष २ सर्व सिद्धि कुरू २ सर्व रोगंनाशय २ । किन्नर किं पुष्प गरुड महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच बेताल रेवती दुर्गा चण्डी कूष्माण्डिनी डाकिनी बन्धं सारय २ । सर्व शाकिनी मर्दय मर्दय, सर्व योगिनी गण चूर्णय २, नृत्य २ गाय २ कल २ किलि २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ मुलु २ कुलु २ कुरू २ अस्माकं वरदेः पद्मावती हन २ दह २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिंदि २ ह्रीं २ क्लीं प्लीं प्लं ह्रां श्रृं ह्रूं भ्रूं स्त्रूं स्क्रं ह्रूं ग्रीं प्रीं श्रां श्रीं त्रां त्रीं ह्रां ह्रीं प्रां प्रीं प्रूं प्रः पद्मावती धरणेन्द्रमाज्ञापयति स्वाहा ।

(यहाँ पद्मावती माला मन्त्र पढने मात्र से सिद्ध होता है । नित्य ही दिन में त्रिकाल पढें । सर्व कार्य की सिद्धि होती है, भूत प्रेतादि व्याधियाँ नष्ट होती है)

संस्कृत, श्रीमद्‌गीर्वाण स्तोत्र हिन्दी दोहा में

ॐ नमः स्तोत्र

मुकुटों में जो लगे हुए हैं मणि माणिक श्रीदेवी के
जगमग ज्योति उन्हीं की होती नतमस्तक हैं देवों के
नाग पास अंकुश लेकर शोभायमान है जगदम्बा ओं
क्रों ह्रीं मंत्र रुप से पाप दूर करती अम्बा

निज भुजबल से दैत्य पछाड़े पाताल भेद आई माता
भीमाट्ट हास्य से दैत्य डराकर भक्तों को देती साता
महासर्प की जैसी लीला वैसी लीला धारण कर
बिजली का ले दण्ड मनोहर फिर दुष्टों का मारण कर

आकाश मार्ग में सदा विचरती दीनों की रक्षा करती
सेवक की रक्षा कर देना हाथ जोड़ करती अर्जी दैत्यों ने
उपसर्ग किया था पार्श्वनाथजी के ऊपर निज मस्तक पर
उठा उन्हीं को फणि की छाया की ऊपर

केवलज्ञान हुआ प्रभुजी की धन्य ध्वनि हुई देवों की
उपसर्गों को हटा हटाकर रक्षा करना तुम मेरी
भृंगीकाली और कराली यह परिजन संग है माता
नित्यानन्दी चंडी चामुंडा हरदम साथ रहे माता

क्षां क्षीं क्षूं क्षः मंत्र से बैरी दल का नाश करो
ड्रां ड्रीं ड्रूं ड्रः मन्त्र से भव बन्धन की फास हरो
भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः मंत्र से जब मां की भृकुटी चढ़ती
इसमें कुछ संदेह नहीं तब दुष्टों की छाती जलती

जैनों में जो ह्रीं मंत्र है उसके वश रहने वाली
सेवक देवी अर्ज करत हैं विद्या दो विद्यावाली
शब्दायमान है कटि में कांची और गले में हार पड़े नाना
प्रकार के रत्नमनोहर उन हारों में लगे गड़े ।

तीन भुवन को वश में करती शक्ति अलौकिक है भारी
आह्वानन करती धरणेन्द्र का चतुरक्षरी मन्त्र जारी
विराजमान हो दिव्य पद्मपर सेवा करते देवतागण
कमल सरीखे नेत्र मात्र के अग्नि शिखा सा उनका तन

चतुरक्षरी मन्त्र से माता इस जग का कल्याण करो
सेवक देवी अर्ज करत है मम गृह में धन धान्य भरो ।
महामस्त है चाल मातु की दुष्ट दमन करने वाली
दैदीप्यमान है चरण कमल संध्या समान सी रंगवाली

महाखड्ग प्रचण्ड लिए हो रिपु कुल नाश करो माता
स्त्रां स्त्रीं स्त्रः मन्त्र से निज भक्तों को दो साता
ध्यायमान है मुखारविन्द गर्जन है मेघों की जैसी
चर्तुभुजों में हथियार लिए हो रक्षा कर मैया जैसी

देवताओं से पूज्य चरण हैं उन्हें वन्दना करती हूँ
मेरी रक्षा हरदम करना माता पैरों पड़ती हूँ
हंसारुढ विराजी माता कमलों का है सिंहासने
कामराज से मंत्र युक्त हो बैठो माता पद्मासन

विद्या-बुद्धि मुझको दे दो मातु सरस्वती जगदम्बा
मेरी रक्षा हरदम करना रक्त वस्त्रधारी अम्बा
इस जिह्व के अग्रभाग की और नासिका की अम्बे
हृदन मन अरु नेत्र कर्ण की रक्षा करना जगदम्बे

कन्ध कष्ढ अरु सिर ललाट की पृष्ठ तथा भुजदण्डों
की नाभिपद्म की रक्षा करना सब शरीर के अंगों की
चौबीसी भुजा धारण कर माता दुष्टों का संहार करो
धनुष बाण मूसल हल अंकुश निज हाथों तलवार गहो

चक्र बीजुरी बर्छी त्रिशुल इत्यादिक शस्त्रों को धारण
करके माता निज हाथों से फिर दुष्टों का कर मारण
सावित्री गायत्री चण्डी काल रात्रि अरु गान्धारी
चामुण्डा श्रीदेवी सरस्वती धृति मति विजया है गौरी

इत्यादिक श्रीदेवी कही है चरणों की सेवा करती
महाघोर संकट से माता रक्षा कर दो तुम मेरी
हे अम्बे पद्मावती माता महा सरस्वती महाकाली
पद्मावती स्थापना यंत्र से सिद्ध होऊ सिद्धिवाली

गुरु मुखात होवे प्रकाश आनन्दित होकर के अम्बे
सेवक देवी अर्ज करत है दर्शन दे दो जगदम्बे
इन्द्र और किन्ना दानव से पूजनीय है चरण कमल
सिद्ध यक्ष देवों के द्वारा वन्दनीय है चरणयुगल

शांतरुप पद्मावती माता दर्शन देकर दुःख हरो
सेवक देवी अर्ज करत है भक्ति मन में खूब भरो ।
धूप और चन्दन तन्दुल ले, ले पुष्पों के हार विमल
नाना प्रकार नैवेद्य बनाकर दिव्य वस्त्र के धरो वसन

राज्य पायेगा निश्चय सेवक पूजा करो लगाकर मन
बौद्ध लोग तारा कहते हैं शैव लोग कहते गौरी
जैन लोग पद्मावती कहते हो प्रसन्न मैया मोरी
कोलिक मत के वज्रा कहते सांखय लोग कहें प्रकृति

श्रुतशाली मत के कहते हैं माता तुम हो गायत्री
ज्यादा कहने से क्या मतलब है तीन जगत में है अम्बे
कण-कण में तुम व्याप रही हो रक्षा करना जगदम्बे
रक्त कनेर के फूल सजाकर घृत आदिक लेकर सामान

कुण्ड त्रिकोण बनाकर भाई बिना तुषा का लेकर धान
ॐ मौं जैं मैं वीठा लगाकर उसी कुण्ड कें हवन करो
निश्चय देवी दर्शन देगी दृढतर निज मन खूब करो।
ह्रींकार जो बीजमंत्रहै ह्रीं अष्ट कमल वाला

सोलाह कोठे से युक्त बनेगा वशी करण यह मंत्र
बनेगा पार्श्वनाथ की कृपा होगी इसको जपो लगाकर
मन क्षुद्र रोग अरु शोक हरो दारिद्रनाशिनी हे अम्बे
व्याल व्याघ्र से सदा बचाना दुःख नाशिनी जगदम्बे

पातालपति की प्रिया बनी हो जिन शासन की हो देवी
संकट उसके हरना माता तव चरणों का जो सेवी
भक्तों को सिद्ध दे दे औरनष्ट पाप कर दो माता धार्मिक
जग जितने हों जग में उनको दे दो तुम साता

और अहिंसा धर्म बढ़ा दो जग का कर उपकार महान
सेवक देवी अर्ज करत है माता दे दो तुम वरदान
इन्द्र और धरणेन्द्र पूजते चक्री करते भक्ति विमल
नाना प्रकार के रुप धारती देव पूजते चरण कमल

भवनवासी अरु वैमानिक तथा ज्योतिषी हे अम्बे
व्यन्तरादि हैं सदा पूजते रक्षा करना जगदम्बे
त्रिसन्धया स्तोत्र पढ़े जो लक्ष्मी सुख देनेवाला,
दलित करे कलिके पापों का मंगल हैं मंगलवाला

हो प्रसन्न पद्मावती माता सम्यकदर्शन दे दो तुम
सेवक देवी अर्ज करत है माता दर्शन दे दो तुम
पद्मों का है बाग जल पर पद्मों का है सिंहासन
पद्मराग हर जगह लगी है पद्मों का है जह कानन

पद्मसमान हैं नेत्र मातु के पद्मों का है जहाँ ग्रहन
पद्मावती माता रहती है फूल रहे हैं विमल कमल सर्पो
से केशों को बांधा दिव्य रुप धारण वाली अकाल
मृत्यु को दूर करो तुम महाकाल हरने वाली

ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रः मंत्र से है पवित्र श्री जगदम्बे
सेवक देवी अर्ज करत है विद्या दो मुझको अम्बे
त्रिभुवन को वश में करती हो ध्यान अलौकिक है भारी
ॐ कार मंत्र से युक्त मातु हो कमलासन द्वय भुजधारी

चिंदानंद ईश्वरी अम्बे इस जग का कल्याण करो ।
षट्कोण चक्र के मध्य विराजो भारत में धनधान्य भरो
। तीन लोक कम्पित करती है विकट रुप करती धारण
आं क्रों ह्रीं कार युक्त हो दुष्टों का करती मारण

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मंत्र से दर्शन दे दो जगदम्बे
सेवक देवी अर्ज करत है ऋद्धि वृद्धि दो हे अम्बे
लाल फूल की माला लेकर जगदम्बे का मंत्र जपो
देवी आकरदर्शन देगी निजमन का सन्देह हरो

पुत्रार्थी तो पुत्र पायेगा धनार्थी पावेगा धन
विद्यार्थी तो विद्या पावे विनंती पढ़े लगाकर मन

अष्ट द्रव्यपूजा

प्रासुक जल की झारी भरकर, तुम ढिग लेकर आया हूँ
पद्मावती देवी को देखो, पूजा करने आया हूँ दुःख सन्ताप
सभी मिट जाते हैं, कष्ट सभी मिट जाते हैं जल की धारा देने
से माँ, सुख सभी मिल पाते जाते हैं ।। १ ।।

ॐ आं क्रो ह्रीं हे पद्मावती देवि जलं समर्पयामि ।

गन्ध सुगन्धित लेकर मात, तुम चरणों में आया हूँ ।
अर्चन कर सुख पाने को माँ तुम ढिग अब में आया हूँ ।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते हैं, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
गन्ध की धारा देने से माँ, सुख सभी मिल जाते हैं ।। २ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि दिव्य गन्धं समर्पयामि ।

दिव्य अखण्डित तंदुल लेकर, तुम चरणों में आया हूँ ।
पद्मावती देवी की पूजा करके, मन में हर्षाया हूँ ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं । दिव्य
अक्षतों के अर्चन से माँ सुख सभी मिल जाते हैं ।। ३ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि अक्षतं समर्पयामि ।।

बेला, चमेली, पुष्प सुगन्धित, लेकर अब मैं आया हूँ ।
दिव्य सुवासित फूलों से माँ पूजा करने आया हूँ ।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
पुष्प सुगन्धित की पूजा से सुख सभी मिल जाते हैं ।। ४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि पुष्पं समर्पयामि ।।

घेवर पूड़ी और जलेबी थाली भरकर लाया हूँ ।
दिव्य चरू से अर्चन करके सुख संपत्ति को पाता हूँ ।
दुःख संताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
नैवेद्य की पूजा से माता सुख सभी मिल जाते हैं ।। ५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि नैवेद्यं समर्पयामि ।।

घृत का दीपकलेकर माता तुम चरणों में आया हूँ ।
दिव्य प्रकाश की इच्छा लेकर तुम चरणों में आया हूँ ।

दुःख सन्ताप सभी मिट जाते हैं कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
दीपक की ज्योति से माता सुख सभी मिल जाते हैं ।। ६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि दीपं समर्पयामि ।

धूप दशांगी लेकर माता तव चरणों में आया हूँ ।
सभी प्रकार के कर्मों को मैं आज मिटाने आया हूँ ।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते हैं कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
धूप दशांगी खेने से माँ सुख सभी मिल जाते हैं ।। ७ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि धूपं समर्पयामि ।।

केला, आम, सुपारी आदि ले सुवर्ण थाल भर आया हूँ ।
दिव्य मधूर सुपक्वफलों को अब मैं लेकर आया हूँ ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
दिव्य फलों की पूजा से माँ सुख सभी मिल जाते हैं ।। ८ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि फलं समर्पयामि ।।

जल चन्दनादिक द्रव्य सजाकर तुम अर्चन को आया हूँ ।
अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर तुम अर्चन को आया हूँ ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं ।
अष्ट द्रव्य के अर्चन से माँ सुख सभी मिल जाते हैं ।। ९ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि अष्टद्रव्यं समर्पयामि ।।

जल सुगन्धित लायके पद्मावती चरण चढायके ।
चरणों में शीश नवाय के सभी के दुःख नशाय के ।। १० ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि पाद्यं समर्पयामि ।। जलधारा छोड़े ।।

पंचामृतादि सद्द्रव्यों से, अभिषेक आपका कर दीन्हा,
आपने माता सब जीवों के दुःख दारिद्र को हर लीन्हा ।।११।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि पंचामृतद्रव्यं समर्पयामि ।।

मिष्ट मधुर इक्षुदण्ड से पूजा आपकी कर दीन्हीं । माता अपने
आज सभी की इच्छा पूरी कर दीन्हीं ।। १२ ।।

ॐ आं क्रो ह्रीं हे पद्मावती देविं इक्षुदण्डार्चनं समर्पयामि ।।

चना फुलाकर लेकर आया देवी की पूजा को आज ।
इसकी पूजा से मिलता, सुख शांति धनसमृद्धि आज ।। १३ ।।

ॐ आं क्रो ह्रीं हे पद्मावती देवि चणकार्चनम् ।।

थाली भरकर पकवानों की तव चरणों मे आया आज ।
पकवानों की पूजा से मां मिटे जगत का दुःख सन्ताप ।। १४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि पक्वान्नार्चनम् ।।

मिष्ट मधूर सुपक्व फलों को लेकर आया तेरे पास ।
मनवांछित फल दे दो माता, पूरी करदो आश ।।१५।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि फलं समर्पयामी ।।मेवा भी साथ में चढ़ा देवे।।

नानाविध वस्त्रों को मैं लेकर आया देवी आज । वस्त्रों की पूजा
से माता दुःख दारिद्रि सभी मिट जाय ।। १६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि दिव्य वस्त्रार्चनम् ।।

केयूर कुण्डल हार मुकुटादि, भूषण से करूँ पूजा आज ।
आभूषण से पूजा करके, पाऊँ धन वैभव को आज ।। १७ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि षोडशाभरणार्चनम् ।।

कुंकुम, केशर, गन्ध सु लेकर तिलक लगाता तेरे भाल ।
दिव्य ज्ञान हो जावे मेरा, मिटे सर्व जगत सन्ताप ।। १८ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि तिलकार्चनम् ।।

छत्र चँवर मंगल द्रव्यों को लेकर आया माता आज ।
मंगल की मैं कामना करता होवे जगत में शांति आज ।। १९ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि छत्र चामरादि अर्चनम् ।।

शुद्ध सुवर्ण का कलश बनाकर, विशुद्ध जल भरले आया ।
सुवर्ण कलश के अर्चन से माँ, सुख शान्ति को हमने पाया ।।२०।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवी सुवर्ण कलशार्चनम् ।।

निर्मल दर्पण लेकर आया स्वच्छ अति निर्मल देखा भाव ।
दर्पण की निर्मलता कहती करो सभी मिल निर्मल भाव ।। २१ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवि दर्पणार्चनम् ।।

वस्त्रादिक की झण्डी लेकर तव चरणों में आया आज ।
इसकी पूजा से मिटते हैं इस जगत के सभी सन्ताप ।। २२ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवी पताकार्चनम् ।।

नानाविध के वाद्य बजाकर नाचूँ गाऊँ देखो आज ।
तीन प्रदक्षिणा देकर माता तुमको नमन करूँ मैं आज ।। २३ ।।

वसुविध द्रव्यादि को लेकर करता हूँ मैं पूजा आज ।
अष्ट महानिधि को पाने हूँ चरणों में आज ।। २४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावती देवी अर्घ्य समर्पयामि ।।

नाना विधी के समन ले मनमे बहु हर्षाय ।
मे पुजू माता चरण, मन वांछित फल पाय ।।२५।।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलि

चौबीस आयुधों के प्रत्येक अर्घ्य प्रथम कोष्ठ पर चढावे । प्रथम पुष्पांजलि क्षेपण करें ।

चौबीस भुजा के अर्घ्य

प्रथम हाथ में खंग जु शोभे हमतो तेरे देखें हाथ ।
दुष्टों का निवारण करके शान्ति देती देखो आप ।। १ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं प्रथम हाथ में खंम आयुद्धधारिणी हे पद्मावती देवी अर्घ्यं।।

खड्गायुध को धारणकरके शोभित होती माता आज ।
दूजे हाथ की शोभा इससे मेटो जग के सब सन्ताप ।। २ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दूजे हाथ में खड्गायुध धारिणी हे पद्मावती देवि अर्घ्यं समर्पयामि ।।

तीजे हाथ में मूसल धारकर धर्म की सेवा करती हो ।
मूसलधारिणी कहलाती हो, जग में शान्ति करती हो ।। ३ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मूसलधारिणी पद्मावती, दैव्ये अर्घ्यं समर्पयामि ।।

चौथे हाथ में हल जो शोभे, हलायुधि कहलाती हो ।
हे जगदम्बे देवी तुम तो सबकी व्याधी हरती हो ।। ४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे हलायुध-धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

सर्पायुध को कर में लेकर, दुष्टबंधन का काम करो ।
हे पद्मावती देवी तुम तो दुर्जन जन का मान हरो ।। ५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सर्पायुध-धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

वह्नि के आयुद्ध को धारो के जगदम्बे माता तुम ।
षष्टम हाथ का आयुध जानो नाश करो पापों का तुम ।। ६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वह्नि धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

चक्रायुध को धारकर, करे दुष्ट संहार ।
सप्तम हो आयुधपति, करो धर्मप्रचार ।। ७ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

शक्ति शस्त्र हे महिमावान तुम हो अष्टम आयुधवान।

दुष्ट देख सब दिश भगजाय, ऐसी तुम हो महिमावान ।। ९ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रायुध धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

तारायुध को धारकर, करे प्रकाश महान।

इस आयुध का काम है मिटे दुःख सन्ताप ।। १० ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं तारा आयुध धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

रत्नत्रय का चिह्न है त्रिशूल आयुध जान।

दशमहात का शस्त्र है करे कर्म संहार ।। ११ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिशुल आयुध धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

खर्पर हाथों धारकर ग्यारम आयुध धार।

भिक्षा मांगे प्रेम की, प्रेम की ज्योति जलाय ।। १२ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं खर्पर आयुध-धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

पद्मावती जगद्‌पूज्य, करो विश्वकल्याण।

डमरु आयुध धारकर करो धर्म प्रचार ।। १३ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं डमरु आयुध-धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

नागपाश को धारकर नागरुप बन जाय।

यह बंधन अति विकट है बंधन छूटे नाय ।। १४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नागपाश आयुध-धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

डंडा को ले हाथ में शोभे अति महान।

दुष्ट जन को दंडित करें, हरे सभी का मान ।। १५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं डंडायुधधारिणी हे पद्‌मावती, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

पाषाण को ले हाथ में, शोभे अति महान।

दुष्टो के सिर पर पड़ हरे सभी का मान ।। १६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पाषाण आयुध धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

मुदगर को ले हाथ में करे दुष्ट संहार।

अज्ञानी भागे फिरैं, हरे सभी का मान ।। १७ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मुदगर आयुध धारिणी हे पद्‌मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

फरसा को ले हाथ में करे दुष्ट संहार।

दुष्ट जन भागे फिरैं हरो सभी का मान ।। १८ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं फरसा आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

कमलायुध से युक्त हो कोमल कमल महान।

इस आयुध का काम है शोभा करे महान ।। १९ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कमला आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

अंकुश आयुध धारकर, अंकुश कर ले आज।

जग जीवों का हित करे, करे जीव उद्धार ।। २० ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अंकुश आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।।

आम्रायुध को धारकर छाया सम बन जाय।

शीतलता प्रदान करें मिटे जगत सन्ताप ।। २१ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आम्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

छत्रायुध को धारकर छत्रपति कहाय।

छत्र सम शोभे अति एकछत्र हो जाय ।। २२ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं छत्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

वज्रायुध को धारकर वज्र सम बन जाये।

इस आयुध का काम है करे दुर्जन संहार ।। २३ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वज्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

वृक्षायुध से होत है शीतलता महान।

जग के जीवों को मिले सुख शान्ति महान ।। २४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वृक्षायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

जीवों को वरदान दे वरद आयुध जान।

माला ले कर में फिरे करे जीव कल्याण ।। २५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वरद्माला आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

चौबीस भुजा जगदम्बिके करो जगत कल्याण।

अपने हित के कारणे कीन्हीं पूजा आन ।। २६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चौबीस भुजा में स्थित चतुर्विंशति आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि ।।

शांतिधारा, पुष्पांजलिंक्षिपेत।

श्री पद्मावती की गोद भरने का भजन एवं मंत्र

आओरी सुहागिन नारी, मंगल गाओरी ।
पद्मावती मां की, गोद भराओरी ।। टेक ।।

सोलह श्रृंगार सोहे, भव्य छबि छाजै ।
स्वर्ण सिंहासन पै, माताजी विराजै ।।
कुंकुम धवल मोती, मांग भराओरी ।।१।। पद्मा.।।

बिंदिया दिपत भाल, हाथों में कंगन ।
नैन सजे काजल, गल माल पुष्पन ।।
पद युग-हाथों में, मेहंदी रचाओरी ।।२।। पद्मा.।।

रेशम की लाल साड़ी-चोली पहनाओ ।
एला ताम्बूल बीड़ा, अर्पण करोओ ।।
हल्दी श्रीगंध इत्र, माँ को लगाओरी ।।३।। पद्मा.।।

घंटा मृदंग वादन, नृत्य-गीत गाओ ।
दीप धूप फल गुड़, व्यंजन चढ़ाओ ।।
रंगावली से बहनो, चौक पूराओरी ।।४।। पद्मा.।।

संपत्ति-पावें हम, विपत्ति नशायें ।
पद्मावती माता को, मन में बसायें ।।
अम्बा चरण 'ज्योति' ध्यान लगाओरी ।।५।। पद्मा.।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मावती देवी इदं अर्घ्य पादा गंधंदीपं धूपं चसबलीं स्वतिकां अक्षतं यक्षभागं च गृहाण स्वाहा (अर्घ्य चढ़ावें) ।

पद्मावतीसहस्त्रनाम

पद्मावतीसहस्त्र नाम पढ़े प्रत्येक शतक के बाद कोठे पर शतक समाप्तिका अर्घ्य चढ़ावे। प्रत्येक नाम के साथ कुंकुम व पुष्प अलग थाली में चढ़ावे, चाहे तो अर्घ्य भी चढ़ा सकते हैं लेकिन १००८ अर्घ्य चढ़ाने पड़ेगे। उसके बाद १०८ अर्घ्य कोठे पर चढ़ावे।

महादेवी के नाम के पहले ''ॐ ह्रीं अर्हं'' ये बीजाक्षर एवं अन्त में ''नमः'' ये शब्द अर्चन करते समय प्रत्येक नाम के साथ जोड़ लेवें।

(उदाहरण -१. ॐ ह्रीं अर्हं पद्मावत्यै नमः)

१. पद्मावत्यै २. पद्मवर्णायै ३. पद्महस्तायै ४. पद्मिन्यै ५. पद्मसनायै ६. पद्मकर्णायै ७. पद्मस्यायै ८. पद्मलोचनायै ९. पद्ममायै १०. पद्मदलाक्ष्यै ११. पद्मवनस्थितायै १२. पद्मालयायै १३. पद्मगन्धायै १४. पद्मरागायै १५. उपरागिकायै १६. पद्मप्रियायै १७. पद्मानाभ्यै १८. पद्माँग्यै १९. पद्मशायिन्यै २०. पद्मवर्गवत्यै २१. पूतायै २२. पवित्रायै २३. पापनाशिन्यै २४. प्रभावत्यै २५. प्रसिद्धायै २६. पार्वत्यै २७. पुरवासिन्यै २८. प्रज्ञायै २९. प्रहलादिन्यै ३०. प्रीतायै ३१. पीतामायै ३२. पद्माम्बिकायै ३३. पातालवासिन्यै ३४. पूणायै ३५. पद्मयोन्यै ३६. प्रियंवदायै ३७. प्रदीप्तायै ३८. पाशहस्तायै ३९. परायै ४०. पारायै ४१. परम्परायै ४२. पिंगलायै ४३. परमायै ४४. पूरायै ४५. पिंगायै ४६. प्राच्यै ४७. प्रतीचिकायै ४८. परकार्यपिरायै ४९. प्रथ्वयै ५०. पार्थिव्यै ५१. प्रथिवीपत्यै ५२. पल्लवायै ५३. प्राणदायै ५४. पात्रायै ५५. पवित्रांग्यै ५६. पूतनायै ५७. प्रभायै ५८. पताकिन्यै ५९. पीतायै ६०. पन्नगाधिपशेखरायै ६१. पताकायै ६२. पद्मकटिन्यै ६३. पतिमान्यायै ६४. पराक्रमायै ६५. पादाम्बुजधरायै ६६. पुष्टायै ६७. परमागबोधिन्यै ६८. परमात्मायै ६९. परमानन्दायै ७०. प्रसन्नायै ७१. पात्रपोषिण्यै ७२. पंचवाणगत्यै ७३. पौत्र्यै ७४. पाखंडध्यै ७५. पितामह्यै ७६. प्रहेलिकायै ७७. प्रत्यंचायै ७८. प्रथुपापौधनाशिन्यै ७९. पूर्णचन्द्रमुख्यै ८०. पुण्यायै ८१. पुलोमायै ८२. पूर्णिमायै ८३. प्रथायै ८४. पाविन्यै ८५. परमानन्दायै ८६. पंडितायै ८७. पंडितेड़ितायै ८८. प्रांशुलभ्यायै ८९. प्रमेयायै ९०.प्रमायै

९१. पराकारवर्तिन्यै ९२. प्रधानायै ९३. प्राथितायै ९४. प्रार्थ्यायै ९५. पट्टदायै ९६. पंक्तिपूरण्यै ९७. पातालस्थायै ९८. पातालेश्वर्यै ९९. प्रणायै १००. प्रेयस्यै नमः ।

अर्घ्य

जल फल आठों मिलाय मान को अर्घ्य करो ।
तुमको पूजों दुःख तार दुःख हरी कार्य करो ।
पद्मादि के शत नाम प्रयस्यन्तआदि सही,
तुम्हे जजत हरत दुःखफंद, पावत सुखमही ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मवत्यादि प्रेयस्यन्त शतनांमधारिण्ये अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।। शांति. पुष्पं ।।

१. महाज्योतिष्मत्यै २. मात्रे ३. महायै ४. मायायै ५. महासत्यै ६. महादीप्तयै ७. मत्यै ८. मित्रायै ९. महाचण्डयै १०. मंगलायै ११. महिष्यै १२. मानस्यै १३. मेघायै १४. महालक्ष्म्यै १५. मनोहरायै १६. मदापहारिण्यै १७. मृग्यायै १८. मानिन्यै १९. मानशालिन्यै २०. मार्गदात्र्यै २१. मुहूतायै २२. माध्व्यै २३. मधुमत्यै २४. महयै २५. महेश्वयै २६. महेज्यायै २७. मुक्ताहारविभूणिण्यै २८. महामुद्रायै २९. मनोज्ञायै ३०. महाश्वेतायै ३१. अतिमोहिन्यहै ३२. मधुप्रियायै ३३. महायायै ३४. मायायै ३५. मोहध्न्यै ३६. मनस्विन्यै ३७. माहिष्मत्यै ३८. महावेगायै ३९. मानदायै ४०. मानहारिण्यै ४१. महाप्रभायै ४२. मदनायै ४३. मंत्रवश्यायै ४४. मुनिप्रियायै ४५. मंत्ररुपायै ४६. मंत्रज्ञायै ४७. मंत्रदायै ४८. मंत्रसागरायै ४९. मनःप्रियायै ५०. महाकायायै ५१. महाशीलायै ५२. महाभुजायै ५३. महाशयायै ५४. महारक्षायै ५५. मनोभेदायै ५६. महाक्षमायै ५७. महाकान्तिधरायै ५८. मुक्तायै ५९. महाव्रतसहायिन्यै ६०. मधुस्त्रवायै ६१. मूर्च्छनायै ६२. मृगाक्ष्यै ६३. मृगावत्यै ६४. मृणालिन्यै ६५. मनःपुष्टयै ६६. महाशवत्यै ६७. महार्थदायै ६८. मूलाधारायै ६९. मूडान्यै ७०. मत्तायै ७१. मातंगगामिन्यै ७२. मंदाकिन्यै ७३. महावद्यायै ७४. मर्यादायै ७५. मेघमालिन्यै ७६. मात्रे ७७. मातामयै ७८. मंदगत्यै ७९. महाकेश्यै ८०. महीधरायै ८१. महोत्साहायै ८२. महादेव्यै ८३. महिलायै ८४. मानवर्द्धिन्यै ८५. महाग्रहायै ८६. महाहरायै ८७. महामायै ८८. मोक्षमार्गप्रकाशिन्यै ८९. मान्यायै ९०. मानवत्यै ९१. मान्यै ९२. मणिनूपुरशोभिन्यै ९३. मणिकान्तिधरायै ९४. मीनायै ९५. महामतिप्रकाशिन्यै ९६. महातन्त्रायै ९७. महादक्षायै ९८. मेधायै ९९. मुग्धायै १००. महागुणायै ।

अर्घ्य

जलफलादि समस्त मिलाय के ।
यजतहूं मां के गुण गाय के ।।
भगत वत्सलदीन दयाल हो,
करहुं भक्ति महागुणवान हो ।। २ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महज्योतिष्यत्यादि महागुण शतनाम धारण्यैअर्घ्य समर्पयामि ।। २ ।। शांति पुष्पा. ।।

१. जिनमात्रे २. जिनन्द्रायै ३. जयंत्यै ४. जगदीश्वर्यै ५. जेयायै ६. जयवत्यै ७. जायायै ८. जनन्यै ९. जनपालिन्यै १०. जगन्मात्रे ११. जगन्मायायै १२. जगज्ज्योतिषे १३. जगज्जितायै १४. जागरायै १५. जर्जरायै १६. जेत्र्यै १७. जमुनायै १८. जलवासिन्यै १९. योगिन्यै २०. योगमूलायै २१. जगद्धात्र्यै २२. जगद्धरायै २३. योगपट्टधरायै २४. ज्वलायै २५. ज्योतिरूपायै २६. ज्वालिन्यै २७. ज्वालामुख्यै २८. ज्वालामालायै २९. जाज्वल्यायै ३०. जगद्धितायै ३१. जैनेश्वर्यै ३२. जिनाधारायै ३३. जीवन्यै ३४. यश:पालिन्यै ३५. यशोदायै ३६. ज्यायस्यै ३७. ज्येष्ठायै ३८. ज्योस्त्रायै ३९. ज्वर नाशिन्यै ४०. ज्वरलोपायै ४१. जराजीर्णायै ४२. जांगुलाऽमयतर्जिन्यै ४३. युगभद्रायै ४४. जगन्मित्रायै ४५. यंत्रिण्यै ४६. जनभूषणायै ४७. योगेश्वर्यै ४८. योगांगायै ४९. योगयुक्तायै ५०. युगादिजायै ५१. यथार्थवादिन्यै ५२. जांबूनदकान्तिधरायै ५३. जयायै ५४. निमेषायै ५५. निर्तिन्यै ५६. तायै ५७. नारायण्यै ५८. निर्मदायै ५९. नीलात्मिकायै ६०. निराकारायै ६१. निराधारायै ६२. निराश्रयायै ६३. नृपवश्यायै ६४ . निरामान्यायै ६५. नि:संगायै ६६. नृपनंदिन्यै ६७. नृपधर्ममय्यै ६८. नीत्यै ६९. नूतन्यै ७०. नरपलिन्यै ७१. नंदायै ७२. नन्दवत्यै ७३. निष्ठायै ७४. नीरदायै ७५. नाग वल्लभाय ७६. नृत्यप्रियायै ७७. नन्दिन्यै ७८. नित्यायै ७९. नैकायै ८०. निरामयायै ८१. नागपाशधरायै ८२. नौकायै ८३. नष्कलंकायै ८४. निरागसायै ८५. नागवल्लयै ८६. नागकन्यायै ८७. नाग्न्यै ८८. नागकुण्डल्यै ८९. निद्रायै ९०. नागदमन्यै ९१. नेत्र्यै ९२. नाराचवर्षिण्यै ९३. निर्विकारायै ९४. निर्वैरायै ९५. नागनाथा यै ९६. नागकल्पभायै ९७. नागस्वामिन्यै ९८. नागरमण्यै ९९. निर्लोभायै १००. नित्या नन्दविधायिन्यै ।

अर्घ्य

जलफलादि वसु द्रव्य मिलाकर तव चरणों में आया हूं।
पूर्ण अर्घ्य से पूजा करके, मनवांछित फल पाया हूँ।
पद्मावती के चरण कमल पर वारि वारि जाऊँ मन वचन काय,
हे करुणानिधि सब दुःख मेटो, याते मैं पूजूँ अबआय,

ॐ आं क्रौं ह्रीं जिनमात्रादिनित्यानेद शत् धारिण्ये अर्घ्यंसमर्पयामि ।। ३ ।। शांति पुष्पां. ।।

१. वज्रहस्तायै २. वरदायै ३. वज्रशीलायै ४. वरूथिन्यै ५. वज्रायै ६. वज्रायुधायै ७. वाण्यै ८. विजयायै ९. विश्वव्यापिन्यै १०. वसुदायै ११. बलदायै १२. वीरायै १३. विषयायै १४. विषमार्दन्यै १५. वसुंधराय १६. वरायै १७. विश्वायै १८. वर्णिन्यै १९. वायुगामिन्यै २०. बहुवर्णायै २१. बीजवत्यै २२. विद्यायै २३. बुद्धिमत्यै २४. विभायै २५. वेधायै २६. वामवत्यै २७. वामायै २८. विनिद्रायै २९. वंशभूषणायै ३०. वरारोहायै ३१. विशोकायै ३२. वेदरूपायै ३३. विभूषणायै ३४. विशालायै ३५. वारूण्यै ३६. वल्यायै ३७. बालिकायै ३८. बालक प्रियायै ३९. वर्तिन्यै ४०. विषध्यै ४१. वालायै ४२. विविक्तायै ४३. वनवसिन्यै ४४. वंद्यायै ४५. विधिसुतायै ४६. वेलायै ४७. विश्वयोन्यै ४८. बुधप्रियायै ४९. बलदायै ५०. वीरमात्रे ५१. वीरस्वे ५२. वीरनन्दिन्यै ५३. वरायुधधरायै ५४. वेषायै ५५. वारिदायै ५६. बलशालिन्यै ५७. बुद्धमात्रे ५८. वैद्यमात्रे ५९. बंधुरायै ६०. बंधुरूपिण्यै ६१. विद्यावत्यै ६२. विशालाक्ष्यै ६३. वेदमात्रे ६४. विभाश्वर्यै ६४. वात्यल्यै ६५. वात्याल्यै ६६. विषमायै ६७. वीशायै ६८. वेदवेदांगधारिण्यै ६९. वेदमार्गरतायै ७०. व्यक्तायै ७१. बिलामायै ७२. बादशालिन्यै ७३. विश्वमात्रे ७४. विषंकायै ७५. वंशजायै ७६. विश्वदीपिकायै ७७. बसंतरुपिण्यै ७८. वर्षायै ७९. विमलायै ८०. विविधायुधायै ८१. विज्ञानियै ८२. विपाशायै ८३. विपंच्यै ८४. वधमोक्षिण्यै ८५. विश्वरूप वत्यै ८६. वृद्धायै ८७. विनीतायै ८८. विशिखाविभायै ८९. व्यालिन्यै ९०. व्याललीलायै ९१. व्याप्तव्याधिविनाशिन्यै ९२. विमोहायै ९३. वाणसंदोहायै ९४. वर्द्धिन्यै ९५. वर्द्धमानकायै ९६. व्यालेश्वरप्रियायै ९७. प्राणप्रेयस्यै ९८. वसुदायिन्यै ९९. विश्वेश्वर्यै १००. व्यन्तरेन्द्रीवरदात्र्यै ।

अर्घ्य

जयचंदनादि वसु द्रव्य सजाकर सुवर्णथाल भर लाया हूँ।
हाथ जोड़कर वंदन कर में अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
वज्रहस्तादि व्यन्तरेन्दीकर को आज मनाने आया हूँ।
सामुहिक से पूजा करके धर्म कमाने आया हूँ।

ॐ आं क्रौ ह्रीं हस्तादि व्यन्तरेन्दीवर दात्र्यशत नाम धारिण्यै अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।। शांतिधारा ।।

१. कामदायै २. कमलायै ३. काम्यायै ४. कामांगायै ५. काम्यसाधिन्यै ६. कलावत्यै ७. कलापूर्णायै ८. कलाधरायै ९. कनीयस्यै १०. कामिन्यै ११. कमनीयांगायै १२. कनत्कांचन सन्निभायै १३. कात्यायन्यै १४. कान्तिदायै १५. केवलाय १६. कामरुपिण्यै १७.कानीनायै १८. कमलामोदायै १९. कम्रायै २०. कान्तायै २१. करप्रियायै २२.कायस्थायै २३. कालिकायै २४. काल्यै २५. कुमायै २६. कालरुपिण्यै २७. कालायै २८. कारायै २९. कामधेन्वै ३०. कास्यै ३१. कमललोचनायै ३२. कुन्तलायै ३३. कनकाभायै ३४. काश्मीरकुंकुमप्रियायै ३५. कृपावत्यै ३६. कुण्डलिन्यै ३७. कुण्डलाकारशायिन्यै ३८. कर्कशायै ३९. कोपलायै ४०. काष्टायै ४१. कौलिक्यै ४२. कुलबालिकायै ४३. कालचक्रधरायै ४४. कल्पायै ४५. कलिकायै ४६. काम्यकारिण्यै ४७. कविप्रियायै ४८. कौशाम्ब्यै ४९. कारिण्यै ५०. कोषवर्द्धिन्यै ५१. कुशावत्यै ५२. करालाभायै ५३. कौशस्थायै ५४. कान्तिवर्द्धिन्यै ५५. कादम्ब्यै ५६. कोशधरायै ५७. कोशाक्ष्यै ५८. कौशवासिन्यै ५९. कलिघ्न्यै ६०. कालहनन्यै ६१. कौमायै ६२. कुलजायै ६३. कृत्यै ६४. कैवल्यदायिन्यै ६५. केकायै ६६. कर्मधन्यै ६७. कालवर्जिन्यै ६८. कलंकरहितायै ६९. कन्यायै ७०. करुणालयवासिन्यै ७१. कर्पूरामोदनि:श्वासयै ७२. कामबीजवत्यै ७३. कल्यै ७४. कुलीनायै ७५. कुन्दपुष्पाभायै ७६. कुक्कुटोरगवाहिन्यै ७७. कलिप्रियायै ७८. कामबाणायै ७९. कमठोपरिशायिन्यै ८०. कठोरायै ८१. कठिनायै ८२. क्रूरायै ८३. कन्दलायै ८४. कदलीप्रियायै ८५. क्रोधिन्यै ८६. क्रोधरुपायै ८७. चक्रहुँकारवर्तिन्यै ८८. कम्बोजिन्यै ८९. काण्डरुपायै ९०. कोदण्डकरधारिण्ये ९१. कुहुक्रीडावत्यै ९२. क्रीडायै ९३. कुमारानंददायिन्यै ९४. कुतूहलायै ९५. केतुरुपायै ९६. केतक्यै ९७. कमलासनायै ९८. कोपिन्यै ९९. कोपरुपायै १००. कुसुमावासवासिन्यै ।

अर्घ्य

जय मलय तन्दुल सुमन चरु दीप, धूप, फलावलि ।

करि अरघ, चरचों चरनयुग मां मोही दुःख से टार हि ।

पद्मावतीशतनाम की जयमाल सुन्दर गाव हूँ ।

तव भक्ति कर हुं शोण पाणे मातसबदुःख हार हि ।। ५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कामदादि कुसुमावास वासिन्यन्तशतनाम धारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।५।।

१. सरस्वत्यै २. शरण्याय ३. सहस्त्राक्ष्य ४. सरोजगायै ५. शिवायै ६. सत्यै ७. सुधारुपायै ८. शिवमायायै ९. सितायै १०. शुभायै ११. सुमेधायै १२. सुमुख्यै १३. सत्यायै १४. सावित्र्यै १५. सामगायिन्यै १६. सुरोत्तमायै १७. सुप्रभायै १८. श्रीरुपायै १९. शास्त्रशालिन्यै २०. शान्तायै २१.सुलोचनायै २२. साध्व्यै २३. सिद्धसाध्यायै २४.सुधात्मिकायै २५.शारदायै २६. सरलायै २७. सारायै २८. सुवेण्यं २९. सुयशः प्रदायै ३०. शंकयै ३१. शमतायै ३२. शुद्धायै ३३. शक्रमान्यायै ३४. शुभंकयै ३५. सुधाहाररतायै ३६. श्मायायै ३७. शमायै ३८. शीलवत्यै ३९. शरायै ४०. शीतलायै ४१. सुभगायै ४२.साव्यै ४३. सुकेश्यै ४४. शैलवासिन्यै ४५. शालिन्यै ४६. साक्षिण्यै ४७. सोमायै ४८. सुभिक्षायै ४९. शिवप्रेयस्यै ५०. शोणवर्णायै ५१. शोणवर्णायै ५२. सुन्दयै ५३. सुरदुन्दयै ५४. शक्त्यै ५५. सुषायै ५६. शौरिकायै ५७. सेव्यायै ५८. श्रियै ५९. सुजानिर्चितायै ६०. शिवदूत्यै ६१. श्वेतर्णाषै ६२. शुभ्राभायै ६३. शोभनाशिरवायै ६४. सिंहिकायै ६५. सकलायै ६६. शोभायै ६७. स्वामिन्यै ६८. शिवपोषिण्यै ६९. श्रेयस्कय ७०. श्रेयस्यै ७१. शौर्य ७२. सौदामिन्यै ७३. शुच्यै ७४. सौभागिन्ये ७५. शोषिण्यै ७६. सुगन्धाये ७७. सुमनःप्रियायै ७८ सौरबेय्यै ७९. सुसुरम्यै ८०. श्वेतातपत्रधारिण्यै ८१. श्रृंगारिण्ये ८२. सत्यवक्त्र्यै ८३. सिद्धार्थायै ८४. शीलभूषणायै ८५. सत्याथिन्यै ८६ संध्याभायै ८७. शच्यै ८८. सत्कृत्यै ८९. सिद्धिदायै ९०. संहारकारिण्यै ९१. सिहयै ९२. सप्तार्चिषे ९३. सफलायै ९४. अर्घ्यदायै ९५. संध्यायै ९६. सिन्दूरवर्णाभायै ९७. सिन्दूरतिलकप्रियायै ९८. सारंगायै ९९. सुतरायै १००. शुभभाषिण्यै ।

अर्घ्य

वसुद्रव्यसंवारी तुमढिंगधारी आनन्द कारी दृगप्यारी,
तुम हो सुख कारी करूणाधारी, याते शरण है नरनारी,
तुम हो नागनेश, भक्तजिनेशं नुत जन ईशं, वृषराजेशंराजेशं
ह नोदुःखषोषं, गुणगण ईशं दयामूर्तेशं भूत्तेशं ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सरस्वत्यादि शुभभाषिण्यन्तशतक नामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६ ।।

१. भुवनेश्वर्यै २. भूषणायै ३. भुवनायै ४. भूमिपप्रियायै ५. भूमिगर्भायै ६. भूपबंद्यायै ७. भुजंगेशप्रियायै ८. भुजंगाम्बिकायै ९. भुजंगभण्णायै १०. भोगायै ११. भुजंगकरशायिन्यै १२. भृग्यै १३. भीतिहरायै १४. भाग्यायै १५. भीमभीमाट्टहासिन्यै १६. भारत्यै १७. भवत्यै १८. भंग्यै १९. भगिन्यै २०. भोगमदिरायै २१. भद्रिकायै २२. भद्ररूपायै २३. भूतत्मायै २४. भूतभंजिन्यै २५. भवान्ये २६. भैरव्यै २७. भीमायै २८. भामिन्यै २९. भ्रमननाशिन्यै ३०. भुजगिन्यै ३१. भुशुंडयै ३२. भेदिन्द ३३. भूम्यै ३४. भिन्नायै ३६. भाग्यवत्य ३७. भाषायै ३८. भोगिन्यें ३९. भोगवल्लाभायै ४०. भूरिदायै ४१. भुक्तिदायै ४२. भुक्त्यै ४३. भवसागरतारिण्यै ४४. भावस्वत्यै ४५. भाश्वरायै ४६. भूत्यै ४७. भूतिदायै ४८. भूतिवर्द्धिन्यै ४९. भाग्यदायै ५०. भोगदायै ५१. भोग्यायै ५२. भाविन्यै ५३. भवनाशिन्यै ५४. भिक्षवे ५५. भट्टरिकायै ५६. भीयै ५७. भ्रामयै ५८ भ्रमयैं ६०. भण्डिन्ये ६१. भृगुरजिन्यै ६२. भण्डयै ६३. भल्लक्यै ६४. भूरिभजिन्यै ६५. भूमिगायै ६६. भूमिदायै ६७. भाष्यायै ६८. भक्षिण्यै ६९. भृगुरजिन्यै ७०. भाराकृन्तायै ७१. भूमिदायै ७२. भंजिन्यै ७३. भूमिपालिन्यै ७४. भद्राये ७५ भगवत्यै ७६. भक्तायै ७७. वत्सलायै ७८. भाग्यशालिन्यै ७९. खेचर्यें ८०. खड्गायै ८१. खण्डिन्यै ८२. खलमदिन्यै ८३. खट्वांगधारिण्यै ८४. खट्वायै ८५. खट्गायै ८६. खगवाहिन्यै ८७. षट्टचक्रभेदिन्यै ८८. ख्यातायै ८९. खगपूज्यायै ९०. खगेश्वर्यै ९१. लागल्यै ९२. ललनायै ९३. लेखायै ९४. लेखायै ९५. ललितालतायै ९६. लक्ष्म्यै ९७. लक्ष्मवत्यै ९८ लक्ष्यायै ९९. लाभदायै १००. लोभवर्जितायै ।

अर्घ्य

जल आदि साजि द्रव्य लिया,
कनक थार धार हम नृत्य किया,
सुखदाय पाय यह अर्घ है ।
हे देवी तुम चरण सेवत हैं ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भुवनेश्वर्यादि लोभवर्जितान्तशत नाम धारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

१. लीलावत्यै २. ललामाभावै ३. लोहमुद्रायै ४. लिपिप्रियायै ५. लोकेश्वर्यें ६. लोकमात्रे ७. लब्ध्यै ८. लोकन्तपालिन्यै ९. लीलायै १०. ललामदायै ११. लोलायै १२. लावण्यायै १३. ललितायै १४. अर्थदायै १५. लोभध्न्यै १६. लम्बन्यै १७. लंकायै १८. लक्षणायै १९. लक्षवर्जितायै २०. उमायै २१. उर्वश्यै २२. उदीच्यै २३. उद्योतायै २४. उद्योतकारिण्यै २५. उदारिण्यै २६. उद्वरोदक्यायै २७. उद्विज्यायै २८. इदकवासिन्ये २९. उदाहारायै ३०. उत्तमायै ३१. उत्तमायै ३२. ओष्ध्यै ३३. उदधितारिण्ये ३४. उत्तरायै ३५. उत्तरवादिन्यै ३६. उद्धरायै ३७. उद्धरनिवासिन्यै ३८. उत्कलिन्यै ३९. उत्कलिन्यायै ४०. उत्कररुपिण्यै ४१. उत्कररूपिण्यै ४२. ॐ कारायै ४३. ओंकाररूपायै ४४. अम्बिकायै ४५. अम्बरचारिन्यै ४६. अमोघाशायुजोये ४७. अन्ताय ४८. अणिमादिगुणसंयुतायै ४९. अनादिनिधनायै ५०. अनन्तायै ५१. कोंदण्डपरिहासिन्यै ५२. अर्पणायै ५३. अथायै ५४. बिन्दुधरायै ५५. अलोकायै ५६. अलल्यालिवांगनायै ५७. आनन्दायै ५८. आनन्ददायै ५९. अलकायै ६०. लज्जायै ६१. सिद्धिप्रदायिकायै ६२. अव्यक्तायै ६३. अश्रमयायै ६४. अमूल्यै ६५. अजीर्णायै ६६. अजीर्णहारिण्यै ६७. अहंकृत्यायै ६८. अजरायै ६९. अरजसे ७०. अहंकारायै ७१. अरात्यै ७२. अन्तदायै ७३. अनुरूपायै ७४. अर्थमूलायै ७५. क्रीड़ायै ७६. कैरवायै ७७. पालिन्यै ७८. अनोकहासुतायै ७९. अभेद्यायै ८०. अच्छेद्यायै ८१. आकाशगामिन्यै ८२. अन्तरायै ८३. आराधितायै ८४. आधारायै ८५. उद्गधायै ८६. गंधज्ञालिन्यै ८७. अलकायै ८८. अलम्बनायै ८९. अलंध्यायै ९०. मोदजायै ९१. शेखरधारिण्यै ९२. आकर्षणायै ९३. अधरायै ९४. अरागायै ९५. मोदजायै ९६. मोदधारिण्यै ९७ अहिनाथायै ९८. अहिप्रियायै ९९. अहिप्राणायै १००. अहोश्वर्यै ।

अर्घ्य

जल फलादिमिलाय मनोहरं अरघधारत ही सब सुख करे ।
जज तहो मां के गुण गाय के चरण अम्बुज प्रीति लगा सके,

ॐ आं क्रौं ह्रीं लीलावत्यादि अहोश्वर्यन्तशत नाम धारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

१. त्रिनेत्रायै २. त्र्यम्बिकायै ३. तंत्र्यै ४. त्रिपुरायै ५. त्रिपुरभैरव्यै ६. त्रिपृष्ठाय ७. त्रिफणायै ८. तारायै ९. तोतिलायै १०. त्वरितायै ११. तुलायै १२. तपःप्रियायै १३. तापस्यै १४. तपोनिष्ठायै १५. तपस्विन्यै १६. त्रैलोक्यदीपिकायै १७. त्रैधायै १८. त्रिसन्ध्यायै १९. त्रिपदाश्रयायै २०. त्रिरुपायै २१. त्रिपथात्राणायै २२. तारायै २३. त्रिपुरसुन्दरयैं २४. त्रिलोचनायै २५. त्रिपथगायै २६. तारामानविमर्दिन्यै २७. धर्मप्रियायै २८. धर्मदायै २९. धर्मिण्यै ३०. धर्मगपालिन्यै ३१. धरायै ३२. धरधरायै ३३. धारायै ३४. धात्र्यै ३५. धर्मागपालिन्यै ३६. धौतायै ३७. धृत्यै ३८. धुर्ये ३९. धीरायै ४०. धुनुन्यै ४१. धनुर्धरायै ४२. ब्रह्माण्यै ४३. ब्रह्मगोत्रायै ४४. ब्राह्मण्के ४५. ब्रह्मपालिन्यै ४६. ब्राहययै ४७. विद्युत्प्रभायै ४८. वीरायै ४९. वीणायै ५०. वासवपूजि -तायै ५१. गीतप्रियायै ५२. गर्भधरायै ५३. गर्भदाये ५४. गजगामिन्यै ५५. गंगायै ५६. गोदावयै ५७. गोर्गायै ५८. गायत्र्यै ५९. गणपालिन्यै ६०. गोचर्ये ६१. गोमत्यै ६२. गुब्बर्यैं ६३. गन्धायै ६४. गान्धारिण्यै ६५. गुहायै ६६. गरीयस्यै ६७. गुणोपेतायै ६८. गरिष्ठायै ६९. गरमर्दिन्यै ७०. गंभीरायै ७१. गुरुरुपायै ७२. गीतायै ७३. गर्वापहारिण्यै ७४. गृहिण्यै ७५. गृहिण्यै ७६. गौये ७७. गन्धायै ७८. गन्धावासिन्यै ७९. गरूड्यै ८०. ग्रासिन्यै ८१. गूठायै ८२. गेहिन्यै ८३. गुणदायिन्यै ८४. चक्रमाध्यायै ८५. चक्रधारायै ८६. चित्रिण्यै ८७. चित्रिरुपिण्यै ८८. चर्चितायै ८९. चतुरायै ९०. चित्रायै ९१. चित्रमायायै ९२. चतुर्भुजायै ९३. चन्द्राभायै ९४. चन्द्रवर्णायै ९५. चक्रिण्यै ९६. चक्रधारिण्यै ९७. चक्रायुधायै ९८. चक्रधरायै ९९. चण्ड़यै १००. चण्ड़रपराक्रमायै ।

अर्घ्य

जलगंध आदि मिलाय आठों दरब अर्घ्य सजाय के ।
पूजूं चरन रज भक्ति युत जाते जगत संकट टरे ।।
तुम मात जगकी नाथ माता मुनि जनकी सेवा करो
तिस चरन आनन्द भरन तारन तरन विरद विशाल हो ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं त्रिनेत्रादि चण्डपराक्रमान्त शतनाम धारिण्यै अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।

१. चक्रेश्वयै २. चसूचिन्त्यायै ३. चंचलायै ४. चंचलान्मिकाय ५. चन्द्रलेखायै ६. चन्द्रभागायै ७. चन्द्रिकायै ८. चन्द्रमन्डलायै ९. चन्द्रकान्यै १०. चन्द्रममिश्रये ११. चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै १२. चतुः -समुद्रपारान्तायै १३. चतुराश्रमवासिन्यै १४. चतुर्मुख्यै १५. चन्द्रमुख्यै १६. चतुर्वर्गफलप्रदायै १७. चित्स्वरुपायै १८. चिदानन्दायै १९. चितामन्यै २०. चिरंतन्यै २१. चन्द्रहासयै २२. चामुण्डायै २३. चेतनायै २४. चौर्यतर्जिन्यै २५. चैत्यप्रियायै २६. चैत्यलीनायै २७. चन्ततार्थफलप्रदाय २८. हींरुपाये २९. हंसगमन्यै ३०. हाकिन्यै ३१. हिंगुलायै ३२. हितायै ३३. हलायै ३४. हलधरायै ३५. हालायै ३६. हंसवर्णायै ३७. हर्षदायै ३८. हिमान्यै ३९. हरित्तायै ४०. हीरायै ४१. हर्षिग्यै ४२. हरिमर्दिन्यै ४३. गोपिन्यै ४४. गौर्यै ४५. गिरे ४६. गाथायै ४७. दुर्गायै ४८. दुर्ललितादरायै ४९. दामिन्यै ५०. दीधिकायै ५१. दुग्धायै ५२. दुर्गमाये ५३. दुलभोद्यायै ५४. द्वरिकाये ५५. दक्षिणायै ५६. दक्षायै ५७. दीक्षायै ५८. दीक्षितपूजितायै ५९. दमयन्त्यै ६०. दानवत्यै ६१. दुयुत्यै ६२. दीप्तायै ६३. दीवागत्ये ६४. दरिद्रधन्यै ६५. वैरिदरायै ६६. दरायै ६७. दुर्गतिनाशिन्यै ६८. दर्प्पधन्यै ६९. दैत्यनाशायै ७०. वशिन्यै ७१. दर्शनाप्रियायै ७२. वृषप्रियायै ७३. वष्भायै ७४. वृषारुढायै ७५. प्रबोधिन्यै ७६. सूक्ष्मायै ७७. सूक्ष्मगत्यै ७८. श्लक्ष्णायै ७९. धनमालायै ८०. धनध्वन्यै ८१. छायायै ८२. छत्रच्छव्यै ८३. क्षीरायै ८४. क्षीरदायै ८५. क्षेत्ररक्षिण्यै ८६. अपात्मनै ८७. अतिरात्र्यै ८८. रगिन्यै ८९. रतिदारुपायै ९०. स्थूलायै ९१. स्थूलतरायै ९२. स्थूल्यै ९३. स्थडिलशयायै ९४. स्थडिलवासिन्यै ९५. स्थिरायै ९६. स्थणमत्ये ९७. दैव्यै ९८. घनायै ९९.घोरनिनादिन्यै १००. क्षेमकायै १०१. क्षेमवन्यै १०२. क्षेमदायै १०३. क्षेमवद्धिन्यै १०४. शैलूषरुपिण्यें १०५. शिष्टोयै १०६. संसारार्णवतारिण्य १०७. सदासहायिन्यै १०८. परमेश्वर्यें ।

अर्घ्य

जलफल वसु सजिहिमथार तनमन मोदधरो ।
गुणगाऊँ दुःखोदधितार पूजत दुःख हरो ।।
जयपद्मावती तुम मात जगकी नायक हो ।
जय सुखसागर भवपार सन्मति दायक हो ।। १० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चक्रेश्वर्यादि परमेश्वर्यन्तिष्टोत्तर शत नामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।१०।।

॥ श्री पद्मावती अष्टोतर शत नामावली मंत्र ॥

१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महादेव्यै नमः स्वाहा ।
२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कल्याण्यै नमः स्वाहा ।
३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री भुवनेश्वयै नमः स्वाहा ।
४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री चंडै नमः स्वाहा ।
५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कात्यायिन्यै नमः स्वाहा ।
६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गौर्यै नमः स्वाहा ।
७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री जिनधर्मपरायण्यै नमः स्वाहा ।
८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पंच-ब्रह्म पदाराध्यै नमः स्वाहा ।
९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पंच मंत्रोपदेशिन्ये नमः स्वाहा ।
१० ओं आं क्रों ह्रीं श्री पंच व्रत गुणोपेते नमः स्वाहा ।
११ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पंचकल्याण दर्शिनी नमः स्वाहा ।
१२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री स्तोतलाये नमः स्वाहा ।
१३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री नित्याये नमः स्वाहा ।
१४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री त्रिपुराये नमः स्वाहा ।
१५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री काम्यसाधिन्यै नमः स्वाहा ।
१६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री मदनोन्मादिन्यै नमः स्वाहा ।
१७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री विद्याये नमः स्वाहा ।
१८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महालक्ष्यै नमः स्वाहा ।
१९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सरस्वत्यै नमः स्वाहा ।
२० ओं आं क्रों ह्रीं श्री सारस्वताये नमः स्वाहा ।
२१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गणाधीशाये नमः स्वाहा ।
२२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सर्वशास्त्रोपदेशिन्यै नमः स्वाहा ।
२३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सवैश्वर्यै नमः स्वाहा ।
२४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महादुर्ग्यै नमः स्वाहा ।
२५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री त्रिणेत्रायै नमः स्वाहा ।
२६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री फणिशेखरायै नमः स्वाहा ।
२७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री जटा वालेंदुमकुटाये नमः स्वाहा ।
२८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कुक्कुटोरगवाहिन्यै नमः स्वाहा ।

२९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्मुख्यै नमः स्वाहा ।
३० ओं आं क्रों ह्रीं श्री महापद्मायै नमः स्वाहा ।
३१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री धनदेव्यै नमः स्वाहा ।
३२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गुहेश्वर्यै नमः स्वाहा ।
३३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री नागराज महापत्न्यै नमः स्वाहा ।
३४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री नागिण्यै नमः स्वाहा ।
३५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री नागदेवतायै नमः स्वाहा ।
३६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सिद्धांत संपत्रायै नमः स्वाहा ।
३७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री द्वादशांग परायण्यै नमः स्वाहा ।
३८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री चतुर्दश महाविद्यायै नमः स्वाहा ।
३९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री अवधि ज्ञानलोचनायै नमः स्वाहा ।
४० ओं आं क्रों ह्रीं श्री वासंत्यै नमः स्वाहा ।
४१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री वनदेव्यै नमः स्वाहा ।
४२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री वनमालायै नमः स्वाहा ।
४३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महेश्वर्यै नमः स्वाहा ।
४४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महघोरायै नमः स्वाहा ।
४५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महारौद्रायै नमः स्वाहा ।
४६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री भीतमूर्त्यै नमः स्वाहा ।
४७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री भयंकर्यै नमः स्वाहा ।
४८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कंकाल्यै नमः स्वाहा ।
४९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कालरौद्रायै नमः स्वाहा ।
५० ओं आं क्रों ह्रीं श्री गंगायै नमः स्वाहा ।
५१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गांधर्व नायक्यै नमः स्वाहा ।
५२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सम्यगदर्शन संशुद्धायै नमः स्वाहा ।
५३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सम्यगज्ञान परायण्यै नमः स्वाहा ।
५४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सम्यक्चारित्र संपत्रायै नमः स्वाहा ।
५५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री नराणामुपकारिण्यै नमः स्वाहा ।
५६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री अगण्य पुण्य संपत्रायै नमः स्वाहा ।
५७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गणन्यै नमः स्वाहा ।
५८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गणनायक्यै नमः स्वाहा ।
५९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पाताळवासिन्यै नमः स्वाहा ।

६० ओं आं क्रों ह्रीं श्री पद्मयै नमः स्वाहा ।
६१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पद्मास्यायै नमः स्वाहा ।
६२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पद्मलोचनायै नमः स्वाहा ।
६३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री प्रज्ञप्ते नमः स्वाहा ।
६४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री रोहिण्ये नमः स्वाहा ।
६५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री जृंभायै नमः स्वाहा ।
६६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री स्तंभायै नमः स्वाहा ।
६७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री स्तंभिन्यै नमः स्वाहा ।
६८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री मोहिन्यै नमः स्वाहा ।
६९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री योगिन्यै नमः स्वाहा ।
७० ओं आं क्रों ह्रीं श्री योग विज्ञान्यै नमः स्वाहा ।
७१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री मृत्यु दारिद्र भंजिन्यै नमः स्वाहा ।
७२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री क्षमा संपन्न धरण्यै नमः स्वाहा ।
७३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सर्व तीर्थ निवासिन्यै नमः स्वाहा ।
७४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री ज्वालामुख्यै नमः स्वाहा ।
७५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री महाज्वालामालिन्यै नमः स्वाहा ।
७६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री वज्र श्रृंखलायै नमः स्वाहा ।
७७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री नागपाशधरायै नमः स्वाहा ।
७८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री धौर्यै नमः स्वाहा ।
७९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री श्रोणितालफलान्वितायै नमः स्वाहा ।
८० ओं आं क्रों ह्रीं श्री हस्तायै नमः स्वाहा ।
८१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री प्रशस्तायै नमः स्वाहा ।
८२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री विद्यार्यायै नमः स्वाहा ।
८३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री हस्तिन्यै नमः स्वाहा ।
८४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री हस्तिवाहिन्यै नमः स्वाहा ।
८५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री वासंत लक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।
८६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गीर्वाण्यै नमः स्वाहा ।
८७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सर्वाण्यै नमः स्वाहा ।
८८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पद्म विष्टरायै नमः स्वाहा ।
८९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री बालर्कवर्ण संकाशायै नमः स्वाहा ।

९० ओं आं क्रों ह्रीं श्री श्रृंगार रस नायक्यै नमः स्वाहा ।
९१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री अनेकांतात्म तत्वज्ञायै नमः स्वाहा ।
९२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री चिंतितार्थफलप्रदायै नमः स्वाहा ।
९३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री चिंतामण्यै नमः स्वाहा ।
९४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कृपायै नमः स्वाहा ।
९५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पूर्णायैं नमः स्वाहा ।
९६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री पापारंभ विभोचिन्यै नमः स्वाहा ।
९७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कल्पवल्ली समाकारायै नमः स्वाहा ।
९८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री कामधेन्वे नमः स्वाहा ।
९९ ओं आं क्रों ह्रीं श्री शुभंकारायै नमः स्वाहा ।
१०० ओं आं क्रों ह्रीं श्री सद्धर्म वत्सलायै नमः स्वाहा ।
१०१ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सार्वास्यै नमः स्वाहा ।
१०२ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सद्धमोत्सव वर्धिन्यै नमः स्वाहा ।
१०३ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सर्वे पाप प्रशमिन्ये नमः स्वाहा ।
१०४ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सर्व रोग निवारिण्यै नमः स्वाहा ।
१०५ ओं आं क्रों ह्रीं श्री गंभीरायौ नमः स्वाहा ।
१०६ ओं आं क्रों ह्रीं श्री मोहिन्यै नमः स्वाहा ।
१०७ ओं आं क्रों ह्रीं श्री सिद्धायै नमः स्वाहा ।
१०८ ओं आं क्रों ह्रीं श्री स्वेपालितरुवासिन्यै नमः स्वाहा ।

ओं आं क्रों ह्रीं श्री महादेव्यादि स्वेपालितरुवासिन्यंत अष्टोत्तरशत शुभ नामधारिणि पद्मावती देव्यै दिव्य महा अर्ध्यं निर्वपामि स्वाहा ।

। शांतिधारा ।। पुष्पांजली ।।

अष्ठोत्तर शतं नाम रत्न मूलांक मालिकां ।

त्रिसंध्यं पठते नित्यं दा पाप नारिद्य नाशनं ।
दिव्याष्टकं त्रिसंध्यायां ध्यान पूजा जपान्वितं ।
नामांकमालिका स्तोत्रं यः पठेत् वांछित भवेत् ।।१।।
दिव्य स्तोत्रमिदं महा भय हरं पापौघ संहारकं ।
भूत प्रेत पिशाच राक्षस भयं विध्वंसकं संततं ।।
अन्येनार्पित वांछितस्य निलयं सर्वापमुत्युंजयं ।
देव्याः प्रीतिकरं कवित्व जनकं स्तोत्रं कृतं मंगलं ।।२।।

१०८ अर्घ्य

पद्मावती श्री महादेवि हो, विश्व कल्याण करने वाली ।
तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।।
भूत की बाधा सबकी हरकर जग को सुख देने वाली।
अष्ट द्रव्य से पूजापाकर, मनशांति करने वाली,

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महादेवी यजमानस्य भूत बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १।।

कल्याणी श्री महादेव हो, विश्वकल्याण करने वाली,
तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।
भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।
अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्याणी देवी जयमानस्य शाकिनी बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २ ।।

भुवनेश्वरी महादेवि हो, विश्वकल्याण करने वाली ।
तेरा नाम जगत मं सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।
भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भुवनेश्वरी देवीयजमानस्य डाकिनी बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३ ।।

चण्डेश्वरी श्री महादेव हो, विश्वकल्याण करने वाली,
तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।
भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।
अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चण्डेश्वरी देवि यजमानस्य व्यंतर बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि ।। ४ ।।

कात्यायिनी श्री महादेवी हो, विश्वकल्याण करने वाली ।
तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।

भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।

अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कात्यायिनि देवी यजमानस्य वैताल बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ५ ।।

गौरी श्री महादेवी हो, विश्वकल्याण करने वाली ।

तेरानाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।

भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।

अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गौरी देवी यजमानस्य प्रेत बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६ ।।

जिनशासन श्री महादेवी , विश्वकल्याण करने वाली ।

तरे नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।

भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।

अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जिनसेविका देवीयजमानस्य राक्षस बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाही ।। ७ ।।

पंचब्रह्मपदाराध्ये देवी हो, विश्वकल्याण करने वाली,

तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।

भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।

अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचब्रह्मपदाराध्ये देवी यजमानस्य दैत्य बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८ ।।

पंचव्रतगुणोपेता हो, विश्वकल्याण करने वाली,

तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दुःख हरने वाली ।

भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली ।

अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचव्रतगुणोपेता देवीयजमानस्य काकिनी बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९ ।।

पंचमंत्रोपदेशिनी देवी हो, विश्वकल्याण करने वाली,
तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दु:ख हरने वाली।
भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली।
अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचमंत्रोपदर्शिनी देवयजमानस्य शाकिनी बाधानिवार्णाथं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १० ।।

पंचकल्याणदर्शिनी हो, विश्वकल्याण करने वाली,
तेरा नाम जगत में सच्चा, सबके दु:ख हरने वाली।
भूत की बाधा सबकी हरकर जगको सुख देनेवाली।
अष्ट द्रव्य से पूजा पाकर, मन शांति करने वाली ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचकल्याणदर्शिनी देवीयजमानस्य लाकिनी बाधानिवार्णाथं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ११ ।।

तोतिला श्री जगत्माता भक्तिकरें दिन रात।
हाकिनी की दूर करो पूजें हम सब आज ।। १२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तोतिला नाम धारिणी यजमानस्य हाकिनी बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १२ ।।

नीत्यदेवि जगत्माता भक्ति करें दिन रात।
भैरवी को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नीत्या का नाम धारिणी यजमानस्य भैरव बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १३ ।।

त्रिपुरा श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात।
हाकिनी को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री त्रिपुरा नाम धारिणी यजमानस्य भेकस बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १४ ।।

कामसाधिनी श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात।
लीजस: को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री कामसाधिनी नाम धारिणी यजमानस्य लीजस: बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १५ ।।

मदन्मादिन्यै जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।

वह्नय को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मदन्मादिन्यै नाम धारिणी यजमानस्य बह्नये बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १६ ।।

विद्यादेवि जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।

तस्कर को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १७ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री विद्यादेवी नाम धारिणी यजमानस्य तस्कर बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १७ ।।

महालक्ष्मी श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।

श्रृंगिणी को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १८ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री महालक्ष्मी नाम धारिणी यजमानस्य श्रृंगिणी बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १८ ।।

सरस्वतीदेवी जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।

दृष्टिण: को दूर करो पूजें हम सब आज ।। १९ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सरस्वती नाम धारिणी यजमानस्य दृष्टिण: बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १९ ।।

सारस्वती श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।

रेलया हाकिनी को दूर करो पूजें हम सब आज ।। २० ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सारस्वती नाम धारिणी यजमानस्य रेलया बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २० ।।

गणाधीशा श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।

पक्षिणी को दूर करो पूजें हम सब आज ।। २१ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री गणाधीशा नाम धारिणी यजमानस्य पक्षिणी बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २१ ।।

सर्वागमोपदेशिनी माता भक्ति करें दिन रात ।

जृंभक को दूर करो पूजें हम सब आज ।। २२ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सर्वागमोपदेशिनी नाम धारिणी यजमानस्य जृंभक बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २२ ।।

जगदम्बा श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।
जलबाधा को दूर करो पूजें हम सब आज ।। २३ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री जगदम्बा नाम धारिणी यजमानस्य जलबाधा बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २३ ।।

महादुर्गा श्री जगत्माता भक्ति करें दिन रात ।
व्याघ्रबाधा को दूर करो पूजें हम सब आज ।। २४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री महादुर्गा नाम धारिणी यजमानस्य व्याघ्र बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २४ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसर लाइये,
हेम पात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
त्रिनेत्रदेवी सेवा अपकी करूँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। २५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिनेत्रादेवी शुकर बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २५ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
फणिशेखरी देवी सेवा आपकी करूँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। २६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं फणिशेखरी देवी चित्रक बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २६।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
शिकारूहइन्दु देवी सेवा आपकी करूँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। २७ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शिखारूहइन्दु देवी हस्ति बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २७ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
कुक्कुरोरग देवी सेवा आपकी करूँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। २८ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कुक्कुरोरग देवी भूमिया बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २८ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,

हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,

चतुर्मुखी देवी सेवा आपकी करूँ सदा,

दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। २९ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्मुखी देवी शत्रुकृत बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। २९ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,

हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,

महापद्याया देवी सेवा आपकी करूँ सदा,

दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३० ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महापद्याया देवी ग्रामीण बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३० ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,

हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,

धनदेवी देवी सेवा आपकी करूँ सदा,

दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३१ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं धनदेवी देवी दुर्जुन बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३१ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,

हेमपात्र देवी सेवा आपकी करूँ सदा,

गुहेश्वरी देवी सेवा आपकी करूँ सदा,

दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३२ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गुहेश्वरी देवी गोनस: बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३२ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,

हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,

नागराजमहापत्नी देवी सेवा आपकी करूँ सदा,

दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३३ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नागपत्नी देवी रविग्रह बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३३ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
नागिनी देवी सेवा आपकी करुँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३४ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नागिनी देवी सोमग्रह बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३४ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
नागदेवता देवी सेवा आपकी करूँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३५ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नागदेवता देवी मंगलग्रह बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३५ ।।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकै सु आपको चढाइयै,
सिद्धान्तसंपन्ना देवी सेवा आपकी करूँ सदा,
दीजिए सर्वसुख भूलिये नहीं कदा ।। ३६ ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सिद्धान्तसंपन्ना देवी बुधग्रह बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।३६।।

द्वादशांगपरायणा की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ३७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं द्वादशांगपरायणा देवी यजमानस्य गुरूग्रह बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३७ ।।

चतुर्दशमहाविद्या की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ३८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चतुर्दशमहाविद्या देवी यजमानस्य शुक्रग्रह बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामित स्वाहा ।। ३८ ।।

अवधिज्ञाननेत्राम्बा की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूणासिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ३९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अवधिज्ञाननेत्राम्बा देवी यजमानस्य शनिग्रह बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ३९ ।।

वासन्तीदेवी की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं वासन्ती देवी यजमानस्य राहुग्रह बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४० ।।

वनदेवी की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४१ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं वनदेवी यजमानस्य केतुग्रह बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४१ ।।

वनमाला की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं वनमाला देवी यजमानस्य वृश्चिकाविष बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४२ ।।

महेश्वर्य की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महेश्वर्य देवी यजमानस्य सर्पविष बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४३ ।।

महागोराय की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महागोराय देवी यजमानस्य उररोग बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४४ ।।

महारौद्राय की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महारौद्राय देवी यजमानस्य कण्डुरोग बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४५ ।।

भीतमूर्ति की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ४६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं भीतमूर्ति देवी यजमानस्य कुष्टरोग बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४६ ।।

भयंकर्यै की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूं ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हे भजूँ ।। ४७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं भयंकर्यै देवी यजमानस्य भस्मकरोग बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४७ ।।

कंकालि की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।

मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।। ४८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कंकाली देवी यजमानस्य श्लेश्म बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाही ।। ४८ ।।

कालरात्रि की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।। ४९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कालरात्रि देवी यजमानस्य वात बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ४९ ।।

गंगाया की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।। ५० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गंगाया देवी यजमानस्य पीत बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ५० ।।

गंधर्वनायिका की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।। ५१ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गंधर्वनायिका देवी यजमानस्य गुल्म बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ५१ ।।

सम्यग्दर्शनशुद्धा की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।। ५२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सम्यग्दर्शनशुद्धा देवी यजमानस्य पाण्डुरोग बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ५२ ।।

सम्यग्ज्ञानपरायणा की जो वन्दना करें,
वे अल्पमृत्यु जिनपूर्ण आयु को धरें ।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्णसिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ ।। ५३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सम्यग्ज्ञानपरायणा देवी यजमानस्य भगंदर बाधानिवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ५३।।

सम्यक्चारित्रसंपन्नाये शुद्धी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,
मैं पुजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाउँ सुखकारी ।। ५४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सम्यक्चारित्रसंपन्ना माता क्षय रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।५४।।

नराणां उपकारार्थं धर्म कमाये,सुख को पाये मनहारी,
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ५५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नराणां उपकाराय माता रक्त क्षय रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।५५।।

अगण्यपुण्यसंपन्नाये धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ५६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अगण्यपुण्यसंपनाये माता स्फोटक रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।५६।।

गणनिमाताये धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ५७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गणनीमाता मम् मारी रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ५७ ।।

गणनायिकाये धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ५८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गणनायिकाये माता मम उदररोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।५८ ।।

पातालवासिनाये धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ५९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पातालवासिनि माता ममा ह्रदय रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।।५९।।

पद्मावत्यायै धर्म कमाये,सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावतीदेवीमम चक्षु रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६० ।।

पद्मस्यायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६१ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मस्यायै माता मम् मुख रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६१ ।।

पद्मलोचनायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मलोचना माता मम् नासिका रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६२ ।।

प्रज्ञप्तायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रज्ञप्तायै माता मम कर्ण रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६३ ।।

रोहिणायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६४।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं रोहिणी माता मम राजभय रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६४ ।।

माताजृभायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं जृभा माता मम मार्गगत भय निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६५ ।।

माताजयायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं जयामाता मम अतिवृष्टि उपद्रव निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६६ ।।

मातास्तंभायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं स्तंभामाता मम नदीगत बाधा निवार्णार्धं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ६७ ।।

मातास्तंभान्यै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं स्तंभिन्यायै माता मम सरोवर गत उपद्रव निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वा ।। ६८ ।।

योगीन्यायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ६९ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं योगीनी माता मम विष बाधा निवार्णार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।६९।।

योगविज्ञान्यायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ७० ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं योगविज्ञान्यायै माता मम व्यापार कृत उपद्रव निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७० ।।

मृत्युदारिद्रीभंजिनायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ७१ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं मृत्युदारिद्रीभंजिनी मातासु स्त्रीरत्न प्रात्यर्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७१।।

क्षमासंपन्न धरणीयाये शुद्धी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी,

मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्यकमाऊँ फल को पाऊँ सुखकारी ।। ७२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं क्षमासंपन्न धरणी माता मम सुयोग्य पुत्ररत्न प्राप्त्यर्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७२ ।।

जय जय श्री सर्वतीर्थनिवासी देवी हमारी,

जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।

जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।

जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७३ ।।

ॐ आं क्रौ ह्रीं सर्वतीर्थनी देवी यजमानस्य सर्व विवादे जय करर्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७३ ।।

जय जय श्री ज्वालामुखी देवी हमारी,

जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।

जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।

जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं ज्वालामुखी देवी यजमानस्य नानाविद्याप्राप्तर्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७४ ।।

जय जय श्री महाज्वालामालिन देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवि की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं महाज्वालामालिन देवी यजमानस्य सर्व विद्युतोपद्रवशांति करर्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७५ ।।

जय जय श्री वज्रश्रृंखला देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं वज्रश्रृंखला देवी यजमानस्य सर्व दुर्भिक्षोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७६ ।।

जय जय श्री नागपासधरा देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं नागपासधरा देवी यजमानस्य सर्व वाकसिद्धि करणार्थं अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।। ७७ ।।

जय जय श्री धुर्या देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं ध्रुर्यावि देवी यजमानस्य सर्व श्रुतज्ञानप्राप्तकरणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७८ ।।

जय जय श्री श्रोणितानफलान्विता देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।

जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ७९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रोणितानफलान्विता देवी यजमानस्य सर्व चिंतितफल प्राप्त करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ७९ ।।

जय जय श्री हस्ता देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तक देवी यजमानस्य सर्व अपकीर्ति नीरस करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८० ।।

जय जय श्री प्रसस्ता देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८१ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रसस्त देवी यजमानस्य सर्व कुटुम्बोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८१ ।।

जय जय श्री विद्या देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं विद्यादेवी देवी यजमानस्य सर्व संग्रामोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८२ ।।

जय जय श्री हस्तिनी देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तिनी देवी यजमानस्य सर्व परकृताकर्षणशांति करणार्थं अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।। ८३ ।।

जय जय श्री हस्तिवाहिनी देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तवाहिनीदेवी यजमानस्य सर्व परकृतमोहनोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८४ ।।

जय जय श्री वासन्तलक्ष्मी देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं वासन्तलक्ष्मी देवी यजमानस्य सर्व वसिकरणोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८५ ।।

जय जय श्री गीर्वाणी देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गीर्वाणी देवी यजमानस्य सर्व स्तंभनकर्मोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८६ ।।

जय जय श्री सर्वाणि देवी हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वाणि देवी यजमानस्य सर्व उच्चाटनोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८७ ।।

जय जय श्री पद्मविष्टरा हमारी,
जय सर्वविघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय जय श्री देवी की मैं वंदना करुँ ।
जय अष्ट रिद्धिपाय मैं अर्चना करुँ ।। ८८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मविष्टरा देवी यजमानस्य सर्व मारणकर्मोपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८८ ।।

बालार्क का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ८९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं बालार्क देवी को दण्डकायुध धारिणी यजमानस्य सर्व क्रूरजीवोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ८९ ।।

श्रृंगारसजायिका का अर्घ करुँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रृंगारसजायिका यजमानस्य सर्व स्थलचरजीवोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९० ।।

अनेकान्ततत्वज्ञा का अर्घ करुँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९१ ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अनेकान्ततत्वज्ञा यजमानस्य सर्व जलचरजीवोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा ।। ९१ ।।

चिंतिताथफलप्रदा का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चिंतितार्थफल प्रदादेवी यजमानस्यपरि विविधायूपद्रवशांति करणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९२ ।।

चिंतामणि अर्घ करुँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चिंतामणि देव यजमानस्य पर चक्र उपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९३ ।।

कृपादेवी का अर्घ करुँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृपादेवी यजमानस्य स्वचक्रोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९४ ।।

पूर्णदेवी का अर्घ करुँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय।

धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्णादेवी यजमानस्य सर्व अनिष्ट संयोगोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९५ ।।

पापारम्भविमोचिनी का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं पापारम्भविमोचिनी यजमानस्य इष्टवियोगोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९६ ।।

कल्पवली का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कल्पवली यजमानस्य सर्व दारिद्रोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९७ ।।

कामधेनु का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं कामधेनु यजमानस्य सर्व मानसिकअशान्ति शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९८ ।।

शुभंकरी का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। ९९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभंकारी यजमानस्य सर्व वाचनीक कर्मोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। ९९ ।।

सधर्मवत्सला का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। १०० ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सधर्मवत्सला यजमानस्य कायिक अशांति उपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०० ।।

सावलि का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। १०१ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सावली यजमानस्य मृगीरोग उपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०१ ।।

सधर्मोत्सववर्द्धिनी का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। १०२ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सधर्मोवत्सववर्द्धिनी यजमानस्य सर्व शीतलरोगोपद्रव शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०२ ।।

सर्वपायोशमनी का अर्घ करूँ, वसु विधि द्रव्य मिलाय ।
धर्म ध्यान वृद्धि करो अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।। १०३ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वपायोपशमिनी यजमानस्य सर्व क्रोधाग्नि शान्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०३ ।।

सर्वरोगनिवारिणी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो ।
नर नारी ने स्तुति कीनी सबको तुमने शांतिदीनी ।। १०४ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वरोगनिवारिणी यजमानस्य कामाग्नि निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०४ ।।

गम्भिरा नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो ।
नर नारी ने स्तुति कीनी सबको तुमने शांतिदीनी ।। १०५ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं गम्भिरा यजमानस्य श्वास रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०५ ।।

मोहिश्री नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो ।
नर नारी ने स्तुति कीनी सबको तुमने शांतिदीनी ।। १०६ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं मोही देवी यजमानस्य संग्रहणी रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०६ ।।

सिद्धादेवी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो ।
नर नारी ने स्तुति कीनी सबको तुमने शांतिदीनी ।। १०७ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सिद्धादेवी यजमानस्य हीचक्री रोग निवार्णार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०७ ।।

सेफालीतरुवासिनी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
नर नारी ने स्तुति कीनी सबको तुमने शांतिदीनी ।। १०८ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सेफालीतरुवासिनी यजमानस्य सम्यक्तप्राप्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।। १०८ ।।

पूर्ण अर्घ्य

एकासौ आठ नामावलि रोगशोकसब दूर करे ।
पूर्णअर्घ से मात हम मिलकर सब पूजा करें ।। १०९ ।।

शांति धारा, पुष्पांजलि.

मंत्र जाप्य १०८ लोंग से

ॐ ह्रीं श्री पद्मावती देवी सताष्टक नाम सहिताय मम इच्छितफल प्राप्ति कुरु कुरु स्वाहा । के साथ १०८ बार कुंकुम अर्चन भी करना है ।

जयमाला

दोहा - पद्मावती सतनाम की जयमाला लिखूँ बनाय ।
देवी स्वरुप वर्णन करुँ सुनो भविक जन आय ।। १ ।।
जयपद्मावती देवी महान करते जन तेरे गुणोगान ।
जो तेरे चरणों में आय उसको तुम आश्रय देदो माय ।
दुःखों से भटके भाविक आज कुछ समझ नहीं आये हे माय ।
कोई रोग शोक पीड़ा दुःखाय, कोई भूत पिशाच पीड़ा कराय।।२।।
कहाँ व्यन्तर बाधादिक दिखाय, कहाँ ईति-भीति व्याधि दिखाय कोई
पुत्र रहित होकरदिखाय, कोई धन वैभव से रहित माय ।
जग में इस विध जन कष्ट पाय, कहीं आश्रय दिखता नहीं माय ।।
तुम सम्यकदृष्टि हो हे माय प्रभु चरणों की सेवा महान ।। ३ ।।
करके तुमने यश पाय-माय कीर्ति फैली जग में महान।
सुनकर आया चरणों में माय, जग का दुःख मेटो मेरी माय ।
करते व्रत तुम्हारा जग हे माय, उस व्रत का नाम है शुक्रवार ।
सप्त शुक्रव्रत भी कहाय इस व्रत का फल देवी है महान ।। ४ ।।
जग-जन की पीड़ा मेटो जाय, करो जन की इच्छा पूरी माय ।
जिसकी जो बाधा है जो माय, उसकी बाधा तुम हरो माय ।
हम दुःखिया दुःख मेटन को आज आये तेरे द्वारे हे माय ।
मति देर करो मेरी ए माय, छूटे धीरज अब कष्ट पाय ।। ५ ।।
दुःख दूर करो सबही प्रकार तुम बिन अब कौन करे सहाय ।
तुम बिन हम किसकी शरण जाय, दुःख दूर करो न कोई सहाय ।
पारस उपसर्ग तुम दूर कीन, कमठोपसर्ग तुम दूर कीन ।
अपने फणपर धारा प्रवीण धरणी ने तुम पर छाया कीन ।। ६ ।।
प्रभु ने जब केवल लक्ष्मी पाय, इन्द्रादिक से तुम प्रशंसा पाय ।
प्रभु चरणों में तुम नृत्य कीन, बाजे नाना विध ढोल बीन ।।
तब कर्मों का क्षय अल्प कीन, पुण्यानुबन्धि हे पुण्य कीन ।
एकावतार का भव जो प्राप्त, तुमने जो कीना सुख प्राप्त ।। ७ ।।

सम्यक्त्वी बनकर तुम महान जिन धर्म की सेवा करो महान ।
जो सतनाम से करे गान, पूजा अर्चा भी करे महान ।
संकट सब उसके शीघ्र जाय, सब रोग शोक बाधा पलाय ।
इस कारण पूजा करी बनाय, कुन्थु का कष्ट मेटो हे माय ।। ८ ।।
श्रद्धा सुमन चढ़ाय के वसु द्रव्य ले निज हाथ में ।
जय माला का मैं अर्घ्य देता, पूर्ण अर्घ्य है साथ में ।। ९ ।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं सतनाम सहित हे पद्मावती देवी जयमाला अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

जल की झारी लेकर शान्ति धारा दे।
शान्ति दे सब जगत को मुझको शान्ति दे ।
शान्तये शान्तिधारा
कर अंजुल बनाय कर पुष्प समूह ले हाथ
पुष्पांजलि में करत हूँ मन में बहु हर्षाय
परिपुष्पांजिलं क्षिपेत ।
आग्रह देख क्षेमा शिष्या का पूजा करी बनाय ।
भाविक जन पूजा करो मन में शान्ति लाय ।

इति पूजा समाप्त

पूजा समाप्त होने के बाद विसर्जन करें जिस मंत्र का जितना जाप किया है उस मंत्र का दशांग आहुति अग्नि प्रज्वलित कर होम कुण्ड में दें, मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका को भोजन दें । विद्वानों का यथा योग्य सत्कार करें। त्यागियों को उनकी योग्यतानुसार उपकरण प्रदान करें । रथोत्सव पूर्वक कार्य को समाप्त करें ?

पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्दं सुरेन्द्रं अधीसं । शतेंद्र सु पूजैं भजैं नाय शीशं ।
मुनीद्रं गणेद्रं नमों जोड़ि हाथं । नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं।।१।।
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै । महा आगतैं नागतैं तू बचावै ।
महावीरतैं युद्ध में तू जितावै । महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै ।। २ ।।
दुःखीदुःखहर्ता सुखी-सुक्खकर्ता । सदा सेवकों को महानंद भर्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं । विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं ।। ३ ।।
दरिद्रीनको द्रव्य के दान दीने । अपुत्रीनको तू भले पुत्र कीने ।
महासंकटों से निकारै विधाता । सवै संपदा सर्व को देहि दाता ।। ४ ।।
महाचोर को वज्र को भय निवारै । महापौन के पुंजतैं तू उबारै ।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ धारा। महालोभ शैलेश को वज्र भारा ।। ५ ।।
महामोह अंधेर को ज्ञान भानं । महाकर्मकांतार को दौ प्रधानं ।
किये नाग नागिन अधोलोकस्वामी । हरयो मान तू दैत्य को हो अकामी ।। ६ ।।
तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनं । तुही दिव्य चिंतामणि नाग एनं ।
पशुनर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै । महास्वर्ग तै मुक्ति में तू बसावै ।। ७।।
करै लोहको हेमपाषाण नामी । रटैं नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी ।
करे सेव ताकी करैं देव सेवा। सुन बैन सोही लहैं ज्ञान मेवा ।। ८ ।।
जपै जाप ताको नहीं पाप लागै । धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै ।
बिना तोहि जानेधरे भव घनेरे । तुम्हारी कृपा तै सरैं काज मेरे ।। ९ ।।

दोहा- गणधर इन्द्र न कर सकै, तुम विनती भगवान ।
'द्यानत' प्रीती निहारकै, कीजै आप समान ।।

पार्श्वनाथ स्तुति

तुमसे लागी लगन, लेलो अपनी शरण ।
पारस प्यारा, मेटो मेटो जी संकट हमारा ।।

निशदिन तुमको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा तेरे चरणों में बीते हमारा ।।
मेटो मेटो जी संकट हमारा ।।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुख को मोड़ा संयम धारा ।।
मेटो मेटो जी संकट हमारा।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाए।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक धारा ।।
मेटो मेटो जी संकट हमारा।
जग के दुःख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है
मेटो जामन मरण, होवे ऐसा यतन पारस प्यारा ।।
मेटो मेटो जी संकट हमारा।
लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया लागे खारा ।।
मेटो मेटो जी संकट हमारा।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

।।दोहा।।

शीश नवा अरिहन्त को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य को, ले सुखकारी नाम ।।
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार।
महावीर भगवान को, मन मंदिर में धार ।।

।।चौपाई।।

जय महावीर दयालु स्वामी, वीर प्रभु तुम जग में नामी ।
वर्धमान है नाम तुम्हारा, लगे हृदय को प्यारा प्यारा ।।
शाँति छवि और मोहनी मूरत, शांत हंसीली सोहनी सूरत ।
तुमने वेष दिगम्बर धारा, कर्म शत्रु भी तुम से हारा ।।
क्रोध मान और लोभ भगाया, माया मोह ने तुमसे डर खाया ।
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता, तुझको दुनिया से क्या नाता ।।

तुझमें नहीं राग और द्वेष, वीतराग तू हितोपदेश ।
तेरा नाम जगत में सच्चा, जिसको जाने बच्चा बच्चा ।।
भूत प्रेत तुम से भय खावें, व्यन्तर राक्षस सब भग जावें ।
महा व्याध मारी न सतावें, महा विकराल काल डर खावे ।।
काला नाग होय फन धारी, या हो शेर भयंकर भारी ।
ना हो कोई बचाने वाला, स्वामी तुम्हीं करो प्रतिपाला ।।
अग्नि दावानल सुगल रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो ।
नाम तुम्हारा सब दुख खोवे, आग एकदम ठण्डी होवे ।।
हिंसामय था भारत सारा, तब तुमने कीना निस्तारा ।
जन्म लिया कुण्डलपुर नगरी, हुई सुखी तब प्रजा सगरी ।।
सिद्धारथ जी पिता तुम्हारे, त्रिशला के आँखो के तारे ।
छोड़ सभी झंझट संसारी, स्वामी हुए बाल ब्रह्मचारी ।।
पंचम काल महा दुखदाई, चाँदनपुर महिमा दिखलाई ।
टीले में अतिशय दिखलाया, एक गाय का दूध गिराया ।।
सोच हुआ मन में ग्वाले के, पहुँचा एक फावड़ा लेके ।
सारा टीला खोद गिराया, तब तुमने दर्शन दिखलाया ।।
जोधराज को दुख ने घेरा, उसने नाम जपा जब तेरा ।
ठंडा हुआ तोप का गोला, तब सबने जयकारा बोला ।।
मन्त्री ने मन्दिर बनवाया, राजा ने भी दरब लगाया ।
बड़ी धर्मशाला, बनवाई, तुमको लाने को ठहराई ।।
तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी, पहिया मसका नहीं अगाड़ी ।
ग्वाले ने जो हाथ लगाया, फिर तो रथ चलता ही पाया ।।
पहिले दिन बैशाख बदी के, रथ जाता है तीर नदी के ।
मीना गूजर सब ही आते, नाच-कूद सब चित्त उमगाते ।।
स्वामी तुमने प्रेम निभाया, ग्वाले का तुम मान बढ़ाया ।
हाथ लगे ग्वाले का जब ही, स्वामी रथ चलता है तब ही ।।
मेरी है टूटी सी नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया ।
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर, मैं हू प्रभु तुम्हारा चाकर ।।
तुमसे मैं अरु कछु नहीं चाहूँ, जन्म-जन्म तेरे दर्शन पाऊँ ।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, वीर प्रभु को शीश नवावे ।।

।।सोरठा।।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन ।
खेय सुगन्ध अपार, वर्धमान के सामने ।।
होय कुवेर समान, जन्म दरिद्री होय जो ।
जिसके नहिं सन्तान, नाम वश जग में चले ।।

।। इति श्री पार्श्वनाथ चालीसा ।।

आरती पंच परमेष्ठी

इह विधि मंगल आरती कीजै,
पंच परमपद भज सुख लीजै ।। टेक ।।
पहली आरती श्री जिनराजा,
भवदधिपार उतार जिहाजा ।। इह विधि. ।।
दूसरी आरती सिद्धनकेरी,
सुमरन करत मिटे भव फैरी ।। इह विधि. ।।
तीजी आरती सूर मुनिंदा,
जनम मरण दुःख दूर करिंदा ।। इह. विधि ।।
चौथी आरती श्री उवझाया,
दर्शन देखत पाप पलाया ।। इह विधि. ।।
पाँचवीं आरती साधु तिहारी,
कुमति-विनाशन शिव अधिकारी ।। इह. विधि. ।।
छठी ग्यारह प्रतिमाधारी,
श्रावक वंदों आनन्दकारी ।। इह विधि. ।।
सातवीं आरती श्री जिनवाणी,
द्यानत सुरग-मुकति सुखदानी ।। इह विधि. ।।
संध्या करके आरती कीजै,
अपना जनम सफल कर लीजै ।। इह विधि. ।।

जो यह आरती पढ़े-पढ़ावे,
सो नर-नारी मोक्षफल पावै ।। इह विधि. ।।
कंचन थाल कपूर की बीती,
सोने की दीपक घी की बाती,
जगमग ज्योति जले सारी राति।। इह विधि।।

आरती श्री पार्श्वनाथजी

जय पारस जय पारस जय पारस देवा ।
माता तुम्हारी वामा देवी, पिता अश्व देवा ।।
जय पारस जय पारस जय पारस देवा ।।
काशी जी में जन्म लिया था, हो देवों के देवा ।।
जय पारस जय पारस जय पारस देवा ।।
आप तेईसवें हो तीर्थंकर, भक्तों को सुख देवा ।।
पाँचों पाप मिटा कर हमरे, शरण देवो जिन देवा ।।
जय पारस जय पारस जय पारस देवा ।।
दूजा और कोई न दीखे, पार लगावे खेवा ।।
जय पारस जय पारस जय पारस देवा ।।
यह भक्त आपका बना रहे, जो करे आपकी सेवा ।।
जय पारस जय पारस जय पारस देवा ।।

पार्श्वनाथजी की आरती

ॐ जय केवल ज्ञानी, प्रभु जय केवल ज्ञानी ।
पार्श्वनाथ करुणा के सागर, स्वर्ग मोक्ष दानी ।। ॐ जय. ।।
चिदानन्द आनन्द कन्द, भक्तों को सुखकारी ।
मनवांछित सुख सम्पति दाता, दुःख संकट हारी ।। ॐ जय. ।।
तारण तरण तुम्हीं भवसागर, से हे शिवगामी ।
मेरे मन मन्दिर में आओ, हे अन्तर्यामी ।। ॐ जय.।।

निर्जन वन में घोर तपस्या, निश्चल बन ठानी।
किया घोर उपसर्ग कमठ ने,बनकर अज्ञानी ।। ॐ जय. ।।
पद्मावती ने तुम्हें शीश पर, उठा लिया स्वामी।
फण मण्डप धरणेन्द्र देव ने, रचा पारगामी ।। ॐ जय. ।।
मेरु समान रहे तुम निश्चल, हे आतम ध्यानी।
कर्म काट संसार ताप टर, वरली शिवरानी ।। ॐ जय. ।।
भाव सहित जो तुमकों ध्यावें, मन से नर-नारी।
जन्म-जन्म के पाप कटें सब, हो सुख भण्डारी ।। ॐ जय. ।।

पद्मावती स्तोत्र

जिन शासनी हंसासनी पद्मासनी माता ।
भुज चारते फल चार दे पद्मावती माता ।। टेक ।।
जब पार्श्वनाथजी ने शुक्ल ध्यान आरम्भा ।
कमठेश ने उपसर्ग तब किया था अचम्भा।
निजनाथ सहित आपके सहाय दिया है ।
निजनाथ को जिन माथ पै चढ़ाय लिया है ।। जिन.१ ।।
फन तीन सुमन लीन तेरे शीश विराजै ।
जिनराज तहाँ ध्यान धरै आप विराजै ।
फनिइन्द्र ने फनि की करी जिनंद पै छाया ।
उपसर्ग वर्ग मेटि के आनन्द बढ़ाया ।। जिन. २ ।।
जिन पार्श्व को हुआ तभी केवल सुज्ञान है ।
समवशरण की बनी रचना महान है ।
प्रभु ने दिया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है ।
तब इन्द्र आदि ने किया पूजा विधान है ।। जिन. ३ ।।
जब से किया तुम पारस के उपसर्ग का विनाश ।
तब से हुआ जस आपका त्रिलोक में प्रकाश ।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण में किया हुलाश ।
किस वास्ते कि इन्द्र खास पास का है दास ।। जिन. ४ ।।

धर्मानुराग रंग से उमंग भरी हो ।
संध्या समान लाल रंग अंग धरी हो ।
जिन संत शीलवंत पै तुरंत खड़ी हो ।
मन भाती दरसावती आनन्द बड़ी हो ।। जिन. ५ ।।
जिन धर्म की प्रभावना का भाव किया है।
तिन साथ ने भी आपको सहाय लिया है ।
तब आपने बस बात को बनाय दिया है ।
जिन धर्म के निशान को फहराय दिया है । जिन. ६ ।।
था बोध ने ताराका किया कुंभ में थापन ।
अकलंकजी से करते रहे बाद बेहापन ।
तब अपने सहाय किया धाय मात धन ।
तारा का हरा मान हुआ बोध उत्थापन ।। जिन.७ ।।
इत्यादि जहाँ धर्म का विवाद पडा है ।
तहाँ आपने परवादियों का मान हरा है ।
तुम से यह स्याद्वाद का निशान खरा है ।
इस वास्ते हम आपसे अनुराग धरा है ।। जिन.८।।
तुम शब्द ब्रम्हरुप मंत्र मूर्ति धरैया ।
चिंतामणि समान कामना की भरैया ।
जप जाग जोग की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुर योग की तत्काल हरैया ।। जिन. ९ ।।
लाख पास तेरे पास शत्रु त्रास से भाजे ।
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजै ।
दुखरुप खर्व गर्व को यह वज्र हरै है ।
कर कंज में इक कंज सो सुख पुन्ज भरे है ।। जिन.१० ।।
चरणारविंद में है नूपुरादि आभरन ।
कटि में है सार मेखला प्रमोद की करन ।
उर में है सुमन माल सुमन भाल की माला ।
पटरंग अंग संग सो हे विशाला ।। जिन. ११ ।।

कर कंज चारु भूषण सो भूरि भरा है ।
भवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरि करा है ।
जुगे भान कान कुण्डल सौ जो जोति धरा है ।
सिर शीश फूल फूल सो अतूल धरा है ।। जिन. १२ ।।
मुख चन्द को अमन्द देख चन्द भी थमा ।
छबि हेर हार हो रहा रम्भा को अचम्भा ।
दृग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे हैं ।
विकसित मुखारविन्द सो आनन्द भरे हैं ।। जिन. १३ ।।
जो आपको त्रिकाल लाल चाह सौ ध्यावे ।
विकराल भूमिपाल उसे भाल झुकावे
जो प्रीत सौ प्रतीत सपरीति बढ़ावे ।
सो ऋद्धि सिद्धि नवों निधि को पावे ।। जिन. १४ ।।
जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपे ।
सो पाप के निधान तेज पुन्ज से दीपे ।
जो भेद मन्त्र वेद में निवेद किया है ।
सो बाध के उपाय सिद्ध साथ लिया है ।। जिन.१५ ।।
धन्य धान्य का अर्थी है सो धन धान्य को पावे ।
सन्तान का अर्थी है सो सन्तान खिलावे ।
निजराज का अर्थी है सो फिर राज लहावे।
पद भ्रष्ट सुपद पाय के मन मोद बढ़ावे ।। जिन. १६ ।।
ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना ।
तुम नाम के सुने हाँ सौ भागे है भूतना ।
कफ बात पित रक्त रोग शोक शाकिनी।
तुम नाम तै डरे मही परात डाकिनी ।। जिन.१७ ।।
भयभीत की हरनी है तुही मात भवानी ।
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी ।
तुम संकटा समस्त कष्ट काटिनी दानी।
सुख सार की करनात शंकरीश महारानी ।। जिन. १८ ।।

इस वक्त में जिन भक्त तो दुख व्यक्त सतावै ।
ऐ ! मात तुझे देखि के क्या दर्द न आवे ।
सब दिन से तो करती रही जिन भक्त पर छाया ।
किस वास्ते उस बात को ऐ मात भुलाया ।।जिन. १९।।
हो मात मेरे सर्व ही अपराध क्षमा कर ।
होता नहीं क्या बाल से कुचाल यहाँ पर ।
कुपुत्र तो होते हैं जगत मांहि सरासर ।
माता न तजै तिन सौं कभी नेह जन्मभर ।। जिन.२० ।।
अब माता मेरी बात को सब भाँत सुधारो ।
मनकामना को सिद्ध करो विघ्न विदारो।
मति देर करो मेरी ओर नेक निहारो ।
करकंज की छाया करो दुख दर्द निवारो ।। जिन. २१ ।।
ब्रह्ममंडनी मुखमंडनी खलखंडनी ख्याता ।
दुखटारि के परिवार सहित दे मुझे साता ।
तज के विलम्ब अब जो अवलम्ब दीजिये ।
वृषचन्द चन्दवृन्द को आनन्द दीजिये ।। जिन. २२ ।।
जिन धर्म से डिगने का कहीं, आ पड़े कारण ।
तो लीजिये उभार मुझे भक्त उधारन ।
निज कर्म के संयोग से जिस जौन में जावो ।
तहाँ दीजिये सम्यक्त्व जो शिवधाम को पावो ।। जिन.२३।।
जिनशासनी हंसासनी पद्मावती माता ।
भुज चारते फल चार दे पद्मावती माता ।।

पद्मावती चालीसा

जिनके केवल दर्शन से ही पाप कर्म नश जाते हैं ।
ऐसे श्री पार्श्व प्रभु चरणों में हम सब शीश झुकाते हैं ।
मरणासन्न नाग-नागिनी को जब प्रभुजी मंत्र सुनाते हैं ।
स्वर्ग पहुँच पद्मावती माता धरणेन्द्र देव बन जाते हैं ।।

चिन्तामणि पार्श्व प्रभु स्वामी मिल आह्वानन करते हैं ।।
शत शत वन्दन ऐसे प्रभु को वह सबका संकट हरते हैं ।।
जिनकी सेविका पद्मावती बन चमत्कार दिखलाया है ।।
धरणेन्द्रदेव ने आकर के प्रभु उपसर्ग हटाया है ।।
चिंतामणि पार्श्वप्रभु को मैं चरणों में शीश झुकाता हूँ ।।
श्रद्धावश चालीसा पद्मावती का साहस कर लिख पाता हूँ ।।
जय-जय पद्मावती माता तुम जिन शासनी हो हंसासिनी हो ।।
भक्तों के कष्ट निवारण को संकट मोचन दुःख हरनी हो ।।
हे माता ! लखकर रुप तेरा मन मेरा अति हरषाया है ।।
कानन कुंडल सोहे अद्भूत मणि मुकुट शीश पर प्यारा है ।।
अरुण वर्ण और श्रीण वस्त्र गले में मोतियन की माला है ।।
अंकुश गदा विराजे कर में खड्ग चक्र अति भाला है ।।
तिलक ललाट लाल सम सोहे मोहिनी मूरति प्यारी है ।।
चरणारविन्द में पायल सोहे जिनकी शोभा न्यारी है ।।
उपसर्ग देख पार्श्व प्रभु को निज आकर शीश बिठाया है ।
शक्ति पायी अद्भुत तुमने यहदेख कमठघबराया है ।।
हुआ केलवज्ञान प्रभु का जभी, तब जय-जयकार हुई भारी ।
आ इन्द्र रचा फिर समोशरण अद्भुत महिमा जिसकी न्यारी ।।
त्रयलोक में यश छाया माता तुम सबको ही सुखदायिनी हो ।
मन भावनी हो दरशावती हो सबको ही आनंद दायिनी हो ।।
अकलंक और बौद्ध गुरू का जब शास्त्र विवाद हुआ भारी ।
तारा देवी ने छुपकर के बौद्धों का साथ दिया भारी ।।
बन सरस्वती देवी तुमने जिनधर्म की जय करवायी है ।
घट भीतर बैठी तारा को तुमने ठोकर दिलवायी है ।।
गुणधर सेठ पड़ा संकट में आ दरिद्रता ने घेरा है ।
याद किया माता तुमको जब बना भक्त वो तेरा है ।।
अतुल लक्ष्मी पायी उसने शरण में तेरी जो आता है ।।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी सुख वैभव पा जाता है ।

भूत प्रेत और यक्ष पिशाच सब तुमसे अति भय खाते हैं ।
देख भवानी रुप तेरा सब शत्रु भय भग जाते हैं ।।
चढ़कर हंस सवारी तुमने दुष्टों को ललकारा है ।
भक्तजनों को सुख पहुँचाया बोलें सब जय जयकारा है ।
हे जगदम्बें ! अम्बिके माता पद्मावती जग माता है ।
शरण पड़ा हूँ आन मैं तोरी तुम ही सब कुछ दाता हो ।।
हे माता पद्मावती देवी अब आके आन उबारो तुम ।
'मुंशी' शरणागत है तोरी नौका पार लगाओ तुम ।।

आरती पद्मावती माता की

पद्मावती माता दर्शन की बलिहारियाँ ।
पद्मावती माता दर्शन की बलिहारियाँ ।।
पार्श्वनाथ महाराज विराजे, मस्तक ऊपर थारे ।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र सभी खड़े रहे नित द्वारे ।।
......पद्मावती
जो जीव थारो शरणों लीनों सब संकट हर लीनों ।
पुत्र पौत्र धन सम्पत्ति देकर मंगलमय कर दीनों ।।
......पद्मावती
डाकिनी शाकिनी भूत भवानी नाम लेत भग जाये ।
वात पित्त कफ रोग मिटे और तन सुखमय हो जाये ।
......पद्मावती
जब जब विपद पड़ी भक्तों पर, तुमने रक्षा कीनी ।
बैरी का अभिमान चूर कर, इज्जत दूनी दीनी ।।
......पद्मावती
दीप धूप और पुष्प हार ले मैं दर्शन को आये ।
दर्शन करके मात तुम्हारे मनवांछित फल पायो ।।
......पद्मावती

आरती पद्मावती माता

ॐ जय. मंगल कारणी, मइया जय मंगल करणी,
जय जय पद्मावती माता सब के दुख हरणी ।। ॐ जय. ।। १ ।।
श्री जिन शासनी हंसासिनी पद्मासनी माता,
जो जन नित तुमको ध्याता सुख सम्पत्ति पाता।। ॐ जय. ।।२।।
श्री पार्श्व प्रभु की माता जी तुम करती हो भक्ति ।
जो पूर्ण नव निधि दो हमको ब्रह्मादि शक्ति ।। ॐ जय. ।। ३ ।।
शुक्ल ध्यान आरम्भ किया जब पारस प्रभु स्वामी ।
तब उपसर्ग कमठ वो करना लगा कामी ।। ॐ जय. ।। ४ ।।
शीश चढ़ाया स्वामी जी को की ऐसी माया ।
सब उपसर्ग कमठ का तुमने छिन में विनशाया ।।ॐ जय.।।५।।
पद्मसानी जिन शासनी कमलासन राजे,
चढ़ी हंस असवारी दुष्टन पर गाजे ।। ॐ जय. ।। ६ ।।
आ धरणेन्द्र ने कीनी जिनवर पर छाया,
सब उपसर्ग मिटाकर आनन्द वर्षाया ।। ॐ जय. ।। ७ ।।
रचना समोशरण आदि की वहाँ पर हुई भारी,
प्रभु जिनवर ने तुमको शक्ति दे डारी ।। ॐ जय. ।। ८ ।।
इन्द्रादिक गुण गावें माता शरणागत आवें,
जय जयकार मचावें प्रभु पारस गुण गावें ।। ॐ जय. ।। ९ ।।
बीच सिंहासन छत्र लगा जिसकी महिमा पूरी,
शीश मुकुट रत्नों का सो है टीका सिन्दूरी ।। ॐ जय. ।। १० ।।
अरुण वर्ण और श्रोण वस्त्र है तुम शक्ति ज्वाला,
कानन कुण्डल साजे गले में है मोतियन माला।। ॐ जय. ।।११।।
अंकुश गदा विराजे कर में खड़ग चक्रधारी,
धीर बंधाओ अरि मिटाओ ओ संकट हारी ।। ॐ जय. ।। १२ ।।
'सेवक' धर्म कुछ जानत नाहीं कृपा करो देवा,
शरण आये की लाज रखो माँ स्वीकार करो सेवा।।ॐ जय.।।१३।।

श्री पद्मावती माता की आरती

ॐ जय जगदम्बे माता, देवी पद्मावती माता
आरती करूँ मंगलमय, देवो सुखदाता ।। टेक ।।
श्री पार्श्वनाथ शासन देवी हो, शिर पर प्रभु सोहे ।।माता शिर.।।
कुक्कुट सर्पवाहिनी माँ के, सहस्त्रनाम मोहे ।। १ ।। ॐ जय. ।।
हुम्बुजपुर में आप विराजी, अतिशय अतिभारी ।।माता अति.।।
पुष्पों का वर प्रसाद लेकर, आनन्द करतारी ।।२।। ॐ जय. ।।
मथुरा के जिनदत्त राय की, आप करी रक्षा ।। माता आप. ।।
रत्नत्रय की महानिधि हो, द्वादशांग दक्षा ।। ३ ।। ॐ जय. ।।
पद्मावर्ण पद्मासन पद्मा, पद्म हस्त सोहे ।। माता पद्म. ।।
पद्मवासिनी पद्मनयन की, पद्म प्रभा मोहे ।।४।।ॐ जय. ।।
नाना मत में विविधनाम से, आपकी भक्ति करें ।।माता आपकी।।
तारा गौरी वज्रा प्रकृति, गायत्री नाम धरें ।। ५ ।। ॐ जय. ।।
कुंकुम हल्दी पान सुपारी, चना फूल सजधार ।। माता चना. ।।
दीप धूप गंध केला श्रीफल,व्यंजन बहुत प्रकार ।। ६ ।। ॐ जय.।।
पूर्ण कलश ले नारि सुहागिन, इह विधि पूज रचाय।। माता इह.।।
सुख सौभाग्य बढ़े सेवक का, मनवांछित फल पाय ।। ७ ।। ॐ जय. ।।

पद्मावती देवी का झूला

देवी का झूला मनहारी, झुलावे देवांगना सारी ।। टेक ।।
झल्लरी मोतियन की दमके, जनेऊ रत्नमई चमके ।
बना शुभ आसन मखमल का, चंदोवा रत्नजड़ा उनका ।।
दोहा- मात विराजी पद्मिमनी, गज वैजयंती हार ।।
पार्श्व प्रभु वर याक्षिणी, धरणेश्वर वर नार ।।
शीष पै तीन फणा धारी ।। १ ।।
केशरिया शाल शुभ चोली, हल्दी डिबिया काजल रोली ।
सांकली नख बिंदिया सुनहरी, कंघी मेहंदी कंगन लेरी ।।

लोंग जावित्री जायफल, पान बिजोरा अनार ?
नींबू केला दाख सुपारी, मंगल सूत्र मय हार ।।
भरावो गोद सजा थारी ।। २ ।।
चोपड़ा चूड़ा ले उपहार, कड़ा ले करे पूर्ण श्रृंगार ।
षोडश विधि सेवा करे अर्पण, ग्रंथ में इसी भांति वर्णन ।।
त्रय जप आदि परिक्रमा कर षोडश श्रृंगार ।
सहस्त्र नाम से कुंकुम अर्चन, करे सुहागन नार ।।
व्रत यह श्रावक शुक्रवारी ।। ३ ।।
प्रार्थना इतनी सुन लीजे, ध्यान मेरी विनती पर दीजे ।।
दयाकर एक काम मम कीजे, ले इक भव अवतार ।
पाश्र्व प्रभु वर यक्षिणी , ले इक भव अवतार ।
धन्य-धन्य परमेश्वरी सेविका करे पुकार ।।
'राजदेवी' चरण शरण तेरी ।। ४ ।।

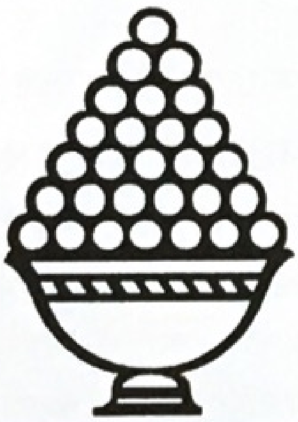

प. पू. आचार्य १०८ श्री गुणनंदीजी महाराज

|| श्री पार्श्वनाथाय नमः ||

गणाधिपती गणधराचार्य श्री १०८ कुन्थुसागरजी महाराज

Lata Arts / 9422043431